अग्र-काव्य

2004

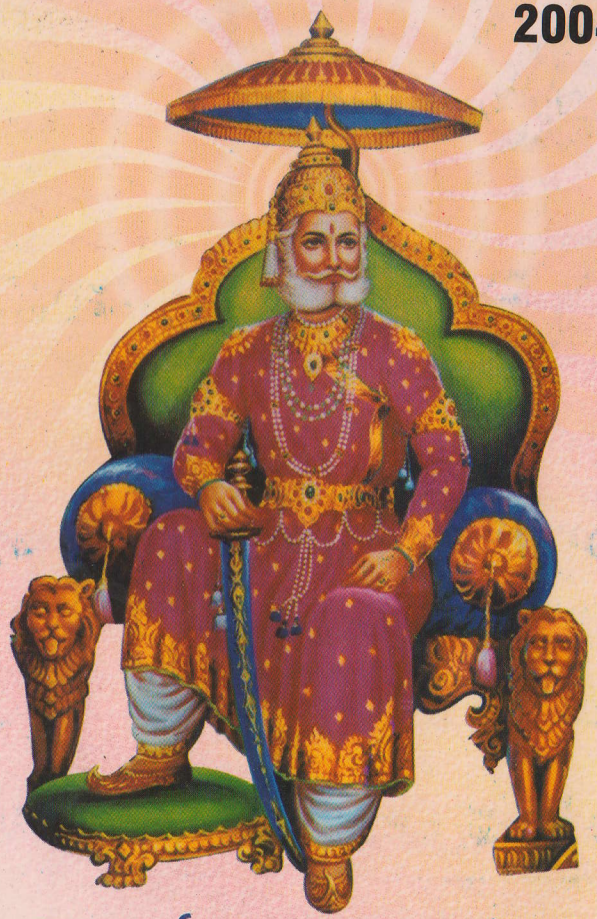

युगप्रवर्तक महाराजा अग्रसेन

अग्रणी शोध एवं प्रकाशन केन्द्र, जयपुर

|| Jai Shree Shyam ||

Ph.: 0141-2304383
3090695
Mob.: 94140-42791
3120439

Bimal Agarwal

AGRASEN
PAPER AGENCY

Authorised Wholesaler
Pitamber Coated Papers Ltd

Stockist
The West Cost Paper Mills. Ltd.

Shri Shyam Kunj. A-47, Sikar House Colony,
Jaipur - 302 016 (Raj.)

4 in Tablet 21/7/20

अग्रकाव्य

(संकलन)

२००४

-: सम्पादक-संकलनकर्त्ता :-

रामलाल अग्रवाल

-: संस्थापक-संचालक :-

(अग्रणी शोध एवं प्रकाशन केन्द्र)

-: परामर्शदाता :-

डॉ. विष्णु पंकज

-: प्रकाशक :-

अग्रणी शोध एवं प्रकाशन केन्द्र

सी-27, सीकर हाउस, चांदपोल बाहर, जयपुर-302 016 (राजस्थान)

फोन : 0141-2305007

सहयोग राशि ७० रुपये

दो शब्द

श्री रामलाल अग्रवाल समाज के पुराने और विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। समाज को संगठित करने, मासिक पत्रिका 'अग्रजीवन' के माध्यम से उसमें जागृति भरने, परिचय-सम्मेलन और सामूहिक विवाहों का आयोजन करने, महाराजा अग्रसेन की जयन्ती तथा अन्य उत्सव और कार्यक्रम आयोजित करने आदि के माध्यम से वे चार दशकों से समाज की निरन्तर सेवा करते रहे हैं।

श्री रामलाल अग्रवाल समय-समय पर अग्रसेन-स्मारिका, काव्य-संग्रह आदि भी प्रकाशित कर रहे हैं। पिछली बार उन्होंने अग्र-काव्य संग्रह का प्रकाशन किया था। अब वे 'अग्रकाव्य-2004' का प्रकाशन कर रहे हैं। इसमें महाराजा अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवालों से संबंधित तथा विविध विषयों की कविताएं संगृहीत हैं। ये पठनीय और मननीय हैं। अग्र-रचनाकारों को आगे लाने का यह प्रयास अच्छा है।

मैं इस सत्कार्य की सफलता की कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि श्री अग्रवाल, भविष्य में इसी प्रकार अधिकाधिक उपयोगी प्रकाशन समाज के समक्ष प्रस्तुत करते रहेंगे।

- डॉ. विष्णु पंकज

अपनी बात

सामाजिक जागृति में साहित्य की अहम् भूमिका रही है। साहित्य में भी गद्य के स्थान पर पद्य का अधिक महत्व है। पद्य साहित्य का पाठक के हृदय पटल पर स्थाही प्रभाव पड़ता है। सुधी पाठक कविता, छंद, सौरठे, मुक्तक आदि के द्वारा समय-समय समाज के अतीत व वर्तमान का ज्ञान स्वयं में संजोकर सामाजिक उत्सवों-कार्यक्रमों आदि पर उद्‌बोधित करता है। इसी लक्ष्य को समक्ष रखते हुए ''पद्य-साहित्य'' में एक 'अग्र-काव्य' संकलित कर प्रकाशित करने का प्रयत्न किया गया है।

समाज में अनेक चिन्तनशील साहित्यकार अवतरित हुए हैं जिन्होंने कुल प्रवर्तक श्री अग्रसेन, अग्रवंश के उद्‌गम स्थल अग्रोहा, अग्रवाल समाज व राष्ट्र की समयानुकुल परिस्थितियों पर अपार साहित्यिक रचनाओं, लेखों द्वारा समाज को चेतन करने की चेष्टा की है। दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएं, पाठकों के मनों पर तत्काल प्रभाव उत्पन्न करती है परन्तु समयोपरान्त वे प्राय: आंखों से ओझल हो जाती हैं। इन्हें संकलन पुस्तिका के रूप में संग्रह किया जाना समाज एवं राष्ट्र के लिए हितकर ही है। -

''अग्रवाल समाज'' के अनेक संगठन, कार्यकर्त्ता समय-समय पर ''संकलन'' प्रकाशित कर स्थायी रूप से ''साहित्यिक'' पुस्तक पाठकों के लिए प्रस्तुत करते रहते हैं। महाराजा अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल समाज पर लिखी कविताओं के विगत में कुछ संकलन अवश्य प्रकाशित हुए हैं परन्तु समय निकलने के बाद फिर ऐसे संकलनों के प्रकाशन की आवश्यकता महसूस होने लगती है। वस्तुत: नवीन संकलन के प्रकाशन करने का यही ध्येय है। प्रस्तुत काव्य संग्रह में अग्रसेन अग्रोहा, अग्रवाल, अग्रवाल-ध्वज एवं अन्य विषयों पर विभिन्न साहित्यकारों की

रचनाएं जो समय-समय विभिन्न पत्रों में प्रकाशित हुई हैं, अन्य काव्य-संग्रहों में संकलित हुई हैं उन्हें पुनः प्रकाशित करने का एक सफल प्रयास है। पूर्व में प्रकाशित कविताओं का संकलन भी अपने आप में एक सुगम कार्य नहीं है परन्तु परिश्रम से सभी कार्य संभव होते हैं।

रचनाओं के संकलन-सम्पादन के पश्चात् इसके प्रकाशन की समस्या भी कोई कम नहीं होती। अनेक अग्रवाल प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के सम्मुख "काव्य" प्रकाशन की इस योजना का प्रारूप रखने पर ही यह प्रकाशन साकार रूप ग्रहण कर सका है। इसके प्रकाशन में सर्वश्री दुर्गादत्त जी बजाज, विमल कुमार जी भूत एवं महेन्द्र कुमार जी पोद्दार ने अपने व्यापारिक प्रतिष्ठानों का विज्ञापनार्थ सहयोग देकर पूर्णता की ओर बढ़ाया है।

काव्य-संग्रह के प्रकाशन में डा. विष्णु पंकज साहित्यकार से जो महत्वपूर्ण परामर्श मिला है वह अत्यन्त ही सराहनीय है। जिन साहित्यकारों की रचनाएं इस काव्य संग्रह में स्थान ग्रहण कर सकी हैं वे निश्चित रूप से साधुवाद के पात्र हैं। इसमें हमारा अपना कुछ भी नहीं है। साहित्यकारों द्वारा समर्पित भावनाओं का समाज के सम्मुख रखने का एक प्रयत्न मात्र है। यदि यह प्रयास समाज में कर्त्तव्य-पालन पूर्ण करने को जागृत कर सके तो ही इसके प्रकाशन को सफल जानना चाहिए।

"अग्रकाव्य संग्रह" के प्रकाशन में जिन महानुभावों का सहयोग रहा है उनके प्रति आभार व्यक्त करना अत्यन्त आवश्यक है। आशा है कि अग्रकाव्य संग्रह को अग्रवाल समाज ही नहीं अपितु सम्पूर्ण साहित्यिक, जगत लाभ उठा सकेगा। भविष्य में भी इसी प्रकार के उदारमना बन्धुओं के सहयोग से अग्रणी शोध एवं प्रकाशन केन्द्र अन्य प्रकाशन कर सकेगा।

- रामलाल अग्रवाल

अनुक्रमणिका

विवरण	लेखक	पृष्ठ
प्रथम खण्ड : महाराजा अग्रसेन		9
• जय-जय अग्रसेन महाराज	**स्वामी ब्रह्मानन्द**	10
• श्री अग्रसेन महाराज की आरती	**त्रिलोक गोयल**	11
• श्री अग्रसेन स्तुति	**विष्णुचन्द्र गुप्त**	12
• संस्कृति के सच्चे रखवारे थे	**सत्यप्रकाश बजरंग**	13
• अग्रसेन की न्याय तुला वैभव के आगे झुकी नहीं	**दुलीचन्द 'शशि'**	14
• अग्रसेन प्रार्थना	**डॉ. विष्णु पंकज**	15
• तब तक विश्वधरा पर चर्चित अग्रसेन तेरा नाम रहेगा	**अनाम**	16
• प्रयाण गीत	**कल्याणमल गोयल झण्डेवाला**	17
• जय अग्रसेन ! जय अग्रसेन !!	**दुलीचन्द 'शशि'**	18
• मैं करूंगी वन्दना	**गिरिजा देवी निर्लिप्त**	19
• अग्रसेन की अमर कहानी	**भाई परमानन्द**	20
• अग्रसेन आदर्श हमारे हमको प्राणों से प्यारे	**विष्णु चन्द्र गुप्त**	23
• म्हारे मन में लगी लगन अग्रसेन के नाम की	**अनाम**	24
• श्री अग्रसेन जी महाराज की आरती	**अनाम**	25
• अग्रसेन गौरव	**चिरंजी लाल अग्रवाल**	26
• अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल	**दुलीचन्द 'शशि'**	30
• तभी तुम्हारा जीवन सार्थक	**दुलीचन्द अग्रवाल**	31
• अग्रसेन महाराज	**माया गोविन्द**	32
• याचना	**बाल कवि वैरागी**	34
दूसरा खण्ड : अग्रवाल ध्वज		35
• अग्रवाल झण्डा गान	**विष्णु चन्द्र गुप्त**	36
• अग्र-ध्वज-वन्दना	**वैद्य निरंजन लाल गौतम**	37

विवरण	लेखक	पृष्ठ
• ध्वजा हमारी केसरिया	मुरारी लाल बंसल	38
• ध्वज-वंदना	बाबूलाल अग्रवाल	39
• झण्डा अभिवादन	भाई परमानन्द	40
• ध्वज-वन्दन	कल्याणमल गोयल झण्डेवाला	41
• ध्वज-वन्दना	राजेन्द्र प्रसाद गर्ग 'राजेश'	42
तीसरा खण्ड : अग्रोहा दर्शन		43
• महालक्ष्मी स्तुति	शैल चतुर्वेदी	44
• अग्रोहा तीर्थ हमारा है	बाल कृष्ण गर्ग 'बालक'	45
• अग्रोहा को तीर्थ बनाओ	वैद्य निरंजनलाल गौतम	46
• पांचवां धाम	दुलीचन्द अग्रवाल	47
• अग्रजन पद की कथा	शिव शंकर गर्ग	48
• जहां समता सदा सुहागिन-सा सोलह श्रृंगार सजाती थी	दुलीचन्द 'शशि'	50
• अग्रोहा की वीरांगनाओं का जौहर व्रत	अनाम	51
• अग्रोहा पुनः बसाना है	दुलीचन्द 'शशि'	52
• एक आस्था अग्रोहा के प्रति	डॉ. स्वराज्यमणि अग्रवाल	54
• चल अग्रोहा धाम	डॉ. विष्णु पंकज	55
• हे अग्रवंश के पुण्य धाम	दुलीचन्द 'शशि'	56
• भजन	बाबूलाल अग्रवाल	57
• अग्रोहा तीर्थ बनाना है	छेदालाल मित्तल	58
चौथा खण्ड : अग्रवाल		59
• उद्‌बोधन	राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त	60
• अग्रवाल महिमा	काका हाथरसी	61
• अग्रवीरो जयन्ती मनाने चलो	दुलीचन्द 'शशि'	62
• अग्रवालों से	लालमन आर्य	63
• अग्रसेन वंशजो कुछ करके दिखादो	डॉ. सन्त हास्य रसी	64
• हम कौन हैं ?	रामावतार केजड़ी वाल	65
• आह्वान	विष्णु चन्द्र गुप्त	66

विवरण	लेखक	पृष्ठ
• साम्य योग के शिव शंकर पर अब तक कितने फूल चढ़ाये	दुलीचन्द 'शशि'	67
• बिखरी तुम्हारी शक्ति जिस दिन संगठित हो जायेगी	शंकर लाल अग्रवाल	68
• अग्रवंश के प्रति	ईश्वर चन्द गुप्त 'ईश'	69
• जाति की बही	त्रिलोक गोयल	70
• उन्नति पथ पर चढ़ते जाओ	तारा चन्द लंडूका	71
• मैं अग्रसेन बन जाऊं	पदमकुमार राधेश्याम मंगल	72
• अग्र तुमको याद करती	कुमारी शकुन्तला 'किरण'	73
• अग्रबन्धुओ उठो	श्रीमती सरोज बिंदल	74
• अग्र कहते हो	स्व. श्री विश्वेश्वरनाथ गुप्त	76
पांचवां खण्ड : विविध		77
• अभिशाप	ज्वाला प्रसाद 'अनिल'	78
• प्रेरणा स्रोत	बी.डी. गुप्ता	80
• दहेज का दानव	सरमन लाल 'सरस'	81
• नर सेवा-नारायण सेवा	नीरज सिंहल 'नादान'	82
• जीवन एक वीणा है	चन्दन बाला जैन	83
• वृद्ध माता-पिता घर में फालतू चीज हो गए	श्याम बंसल	84
• तरुणाई	जय भगवान बंसल	86
• विधवा पेंशन	घनश्याम अग्रवाल	87
• धर्म वही जो	विष्णु चन्द्र गुप्त	88
• दुःख अपना है-अपने पास रहता है	मंजु चौधरी	89
• मां-बाप को भूलना नहीं	अनाम	90
• गायत्री का मंत्र : सत्य ज्ञान का दीपक		91
• नारी एक चेतावनी	चन्दन बाला जैन	92
• शान्ति के मंत्र गाये जा रहे हैं	रामलाल अग्रवाल	94
• ग्लुकोज की एक-एक बूंद की तरह	डॉ. अनन्त पी. आनन्द अग्रवाल	96

अग्रणी शोध एवं प्रकाशन केन्द्र

कार्यालय :-सी-27, सीकर हाउस, चांदपोल बाहर, जयपुर-302016 फोन : 2305007

अग्रवाल परिवार (वंश) परिचय ग्रन्थ-२००४ का प्रकाशन

अग्रकुल प्रवर्तक श्री अग्रसेन जी द्वारा प्रतिपादित आदर्शों, सिद्धान्तों, मान्यताओं को वर्तमान व भविष्य की धरोहर के रूप में संजोये रखने के लिए अग्रणी शोध व प्रकाशन केन्द्र अग्रकाव्य संग्रह, अग्रवाल इतिहास ग्रन्थ, अग्रवाल परिवार (वंश) परिचय ग्रन्थ, अग्र महापुरुषों की जीवनियां आदि के महत्वपूर्ण प्रकाशनों की दिशा में कार्यरत है।

केन्द्र द्वारा प्रस्तावित समाजहित की योजनाओं को सफल बनाना अग्रजनों का दायित्व एवं कर्तव्य है। परिवार परिचय ग्रन्थ के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य आपका, आपके परिवार एवं आपके पूर्वजों की जानकारी आपके अग्रिम वंशज, समाज व राष्ट्र के अन्य समाजों को लाभावित्त करना है।

20'x30'/8 के आकार में प्रकाशित ग्रन्थ में परिचय प्रकाशनार्थ न्यूनतम सहयोग राशि 500 रुपये वांछनीय है। प्रत्येक सहयोग को ग्रन्थ की एक प्रति निःशुल्क प्राप्त होगी। परिचयदाता परिचय सामग्री के साथ दो फोटो तक लगा सकते है।

परिचय ग्रन्थ में जयपुर नगर, जिला एवं राजस्थान प्रदेश के किसी भाग में रह रहे अग्र परिवारों के परिचय के साथ-साथ प्रवासी राजस्थानियों का परिचय प्रकाशित हो सकेगा। सुविधा के लिए परिचय फार्म बनाया गया है उसे मंगाकर सावधानी से जानकारी भेजे।

- प्रथम खण्ड में 500 से 600 परिवारों का परिचय प्रकाशित होगा तत् पश्चात दूसरा खण्ड प्रकाशित किया जायेगा।

- रामलाल अग्रवाल
सम्पादक

फोन : 2305007

अग्रणी संदेश मासिक

सी-27, सीकर हाउस, जयपुर-302 016

प्रकाशनार्थ समाचार लेख भेजें।

प्रथम खण्ड

महाराजा अग्रसेन

हे अग्रवंश के अग्रदूत !
अभ्युदय-दूत भारत सपूत !!
हे महापुरुष, हे जाति प्राण !!!
तुमको प्रणाम, शत शत प्रणाम !!!!

जय-जय अग्रसेन महाराज

❑ स्व. स्वामी ब्रह्मानन्द
हिसारवाले

जय जय अग्रसेन महाराज, भारी भार उठाने वाले ।।
किसमें थी भला यह सामर्थ्य, उजड़े अग्रोहा के अर्थ
समझकर सभी काम फिर व्यर्थ, कहाए नगर बसानेवाले ।।
जय जय.....

यद्यपि सब विभूतियां थीं पास, तुम्हें थी नहीं किसी की आस
तदपि थी जाति पा रही त्रास, उन्हीं का दुःख मिटानेवाले
जय जय.....

बांधा सवा लाख घर कोट, न जिनमें मिला तनिक भी खोट
साथ में लेके उन्हींकी ओट, भूमि का भार जगानेवाले ।।
जय जय.....

जाति पर कृपा करि महाराज, हमारी यहाँ बचाई लाज ।
तुम्हारा पूज रहे हम ताज, नौका पार लगानेवाले ।।
जय जय.....

ऋषि-मुनि किये बहुत एकत्र, यज्ञ शंख बजा सर्वत्र ।
मिलने लगे बधाई पत्र, धर्म की ध्वजा उठानेवाले ।।
जय जय.....

आपका यश छाया सब ठौर, धर्म के कहलाए सिरमौर ।
अहिंसा व्रत पर करके गौर, धर्म की नीति सिखानेवाले ।।
जय जय.....

कहता ब्रह्मानन्द पुकार, चाहता फिर हो जाति सुधार ।
हृदय में बहे प्रेम की धार, तुम्हीं हो धीर बंधानेवाले ।।
जय जय.....

---●---

श्री अग्रसेन महाराज की आरती

❑ त्रिलोक गोयल
अजमेर

जय श्री अग्रसेन हरे, स्वामी जय श्री अग्र हरे ।
कोटि कोटि नत मस्तक, सादर नमन करे ।। जय श्री ।।

आश्विन शुक्ला एकम्, नृप बल्लभ जाए ।
अग्रवंश संस्थापक, नागवंश ब्याहे ।। जय श्री ।।

केसरिया ध्वज फहरे, छत्र, चँवर धारे ।
झाँझ, नफीरी, नौबत बाजत तव द्वारे ।। जय श्री ।।

अग्रोहा राजधानी, इन्द्र शरण आए ।
गोत्र अठारह अनुपम, चार गुण गाए ।। जय श्री ।।

सत्य, अहिंसा पालक, न्याय नीति समता ।
ईंट-रूपै की रीति, प्रकट करे ममता ।। जय श्री ।।

बह्मा, विष्णु, शंकर, वर सिंहणी दीन्हा ।
कुलदेवी महामाया, वैश्य कर्म कीन्हा ।। जय श्री ।।

अग्रसेनजी की आरती, जो कोई नर गाए ।
कहत त्रिलोक विनय से, सुख सम्पत्ति पाए ।। जय श्री ।।

---●---

श्री अग्रसेन स्तुति

❑ विष्णु चन्द्र गुप्त
दिल्ली

जय हो ! जय हो ! जय हो ।।
अग्रसेन महाराज आपकी जय हो ।

अग्रवंश की जीवन धारा,
प्रेम पूर्ण व्यवहार हमारा ।
अग्रजनों के सदय हृदय में,
सत्य, अहिंसा, क्षमा भरी हो ।।

दुर्गण, दुर्व्यसनों को त्यागें
दीनबन्धु का कष्ट मिटावें ।
पीड़ित व असहाय जनों की,
सेवा में तन, मन, धन लय हो ।।

सद्भावों की कीर्ति जगा कर,
न्यायपूर्ण व्यवसाय चला कर ।
जीवन के निज स्वार्थ छोड़ कर,
परमारथ में लीन सदा हो ।।

गोपालन दानादि पहला
दो व्यापार गृहस्थ व्यय तीजा ।
चार भाग में सम्पत्ति बांटे
चौथा भाग सदा संचित हो ।।

सश्रम अर्जित शुद्ध कमाई,
निष्कपट, सत्य व्यवहार भलाई ।
सादा जीवन उच्च विचार का
निज जीवन में अभ्युदय हो ।।

अपनी संस्कृति और सभ्यता,
गो-पूजा, गायत्री गीता ।
गंगा-यमुना, कृष्ण मुरारी
जीवन का प्रेरक संबल हो ।।

संस्कृति के सच्चे रखवारे थे

❑ सत्यप्रकाश बजरंग
शाहदरा, दिल्ली

धर्मवीर, कर्मवीर, दानवीर, श्रेष्ठ अति,
महाराजा अग्रसेन युग के ध्रुव तारे थे ।
दयावान, क्षमाशील, शूरवीर रण माँहि,
भारतीय संस्कृति के सच्चे रखवारे थे ।।

समता और एकता थी खुद में मिसाल
दुख दरिद्रता से दुखी बन्धु पति यारे थे ।
अग्रोहा संस्थापक, ज्ञानवान, कीर्ति पुँज
कोटि कोटि कंठों के पावन जयकारे थे ।।

यज्ञ और तपस्या से सिद्ध लक्ष्मी को,
वणिक समाज और व्यापार को जमाया था ।
मेट कर कुरीतियाँ मानव-मन-आंगन की
निर्मल पावन पवित्र आचरण बनाया था ।।

अट्ठारह गोत्रों से पुत्रों को दिये नियम,
धर्म कर्म का स्वरूप सबको समझाया था।
'बजरंग' श्री अग्रसेन सूर्य के समाज श्रेष्ठ,
अपने तप संयम का तेज बिखराया था ।।

---●---

प्याऊ, मन्दिर या गोशाला,
जन हित में निर्मित धर्मशाला ।
एक ईंट और एक रुपये का,
प्रेरक यह सहयोग प्रबल हो ।।

जय हो ! जय हो ! जय हो ।।
अग्रसेन महाराज, आपकी जय हो ।

---●---

अग्रसेन की न्यायतुला, वैभव के आगे झुकी नहीं

❑ दुलीचन्द शशि
हैदराबाद

ओ अग्रबन्धुओ सुनो-सुनो, तुम अपनी गरिमा भूल रहे ।
तुम महापुरुषों के वंशज हो, कवि तुमको याद दिलाता है ।।
जो लोग स्वयं के लिए जिएं, जो लोग स्वयं के लिए मरें ।
उनका जीवन अकारथ है, ऐसा इतिहास बताता है ।।
तुम उस जाति के धर्मपुत्र, जिनका युग-युग सम्मान रहा ।
पर वर्तमान उस जाति के, कर्मों को नहीं बखान रहा ।।
इसका भी कारण प्रस्तुत है, यदि सिन्धु घड़े में आ जाये ।
बौने लोगों के घर भी यदि, कुछ उच्च सिद्धियां पाजाएं ।।
पर यह जीवन का मर्म नहीं, धन तो आता है जाता है ।
पर आदर्शों का कलाकार युग-युग तक पूजा जाता है ।।
वह अग्रसेन आदर्शों का, गौरवमयी प्रतिमान रहा ।
तब ही रथ सुखसमता का, अग्रोहा में गतिमान रहा ।।
उस अग्रसेन की न्याय तुला, वैभव के आगे झुकी नहीं ।
और इसीलिये अग्रोहा में भी, कभी मनुजता चुकी नहीं ।।
वहां शिव मन्दिर पर साम्ययोग की, कीर्तिध्वजा फहराती थी ।
वैभव की गंगा इसीलिए, उस धरती को नहलाती थी ।।
वहाँ तनिक उचीलो माटी को, श्रद्धा का कुंकुम पावोगे ।
वहां सत्य-अहिंसा झांकेंगी, ज्यों ज्यों बाती उकसावोगे ।।
मग्न-हृदय जय-विजय वहां की, रजकरण में बिखरे बैठे ।
यश-कीर्ति और आदर्शों के, साये वहां पर गहरे बैठे ।।

---●---

अग्रसेन-प्रार्थना

❑ डॉ. विष्णु पंकज
जयपुर

सुनो हे अग्रसेन महाराज ।
हमारे शीघ्र सुधारो काज ।।
इधर है महंगाई का जोर ।
उधर 'मारा-मारी' का शोर ।।
लूटा-पाटी है चहुँ ओर ।
विपदा आन पड़ी है घोर ।।
अब तो हाथ तुम्हारे लाज ।
सुनो हे अग्रसेन महाराज ।।
अरक्षित होते जाते अग्र ।
तंत्र का सहते जाते वज्र ।।
छिना सुख-चैन, हुए सब व्यग्र ।
सुखी हों कैसे अग्र समग्र ।।
बनादो सुखी यह अग्र-समाज ।
सुनो हे अग्रसेन महाराज ।।
तुम्ही हो दीनों के त्राता ।
शांति-सुख, समृद्धि के दाता ।।
तुम्हारे द्वारे जो आता ।
कभी न खाली वह जाता ।।
हमें भी आशिष दे दो आज ।
सुनो हे अग्रसेन महाराज ।।
तुम्हारे चरणों में आये ।
प्रेम से भरा हृदय लाये ।।
अर्चना कर वंदन गाये ।
दया हम पर अब हो जाये ।।
सुनो प्रभु, हम सबकी आवाज ।
सुनो हे अग्रसेन महाराज ।।

---●---

तब तक विश्वधरा पर चर्चित
अग्रसेन तेरा नाम रहेगा !

❑ अनाम

जब तक धरती-गगन रहेगा और पुण्य निष्काम रहेगा ।
तब तक विश्व धरा पर चर्चित, अग्रसेन का नाम रहेगा ।।

●

जिस महामना ने ऊंच-नीच की, बेढव खाई पाटी थी ।
और बन्धु-भावना की खूशबू जिसने जन जन में बांटी थी ।।

●

संस्कृति की सतत साधना को, जो रहा समर्पित जीवन भर ।
था एक तन्त्र शासन जिसका इस लोक तन्त्र से भी बढकर ।।

●

जिससे समता की दीक्षा ले, जन-जन ने पाया अभयदान ।
वह साम्य योग्य का शिल्पकार, कितना अद्‌भुत कितना महान ।।

●

शोषण का जहर पिया जिसने, मानवता का अमृत परसा ।
जिसके शासन में होती थी, सुख समता की अविरल वर्षा ।।

●

जिसके आदर्शों की बेलें, फूलीं पनपीं परवान चढ़ीं ।
करुणा और ममता की मूरत, जिसने कौशल के साथ गढ़ी ।।

●

कर्तव्य कर्म की वेदी को, जिसने निष्ठा से नमन किया ।
वह कर्मठता का मूर्त्त रूप था, बड़ी शान के साथ जिया ।।

●

उस अग्रसेन की कीर्ति ध्वजा, जन सदियों तक फहरायेगा ।
उसकी कृतियों को जन-मानस, श्रद्धा के सुमन चढ़ायेगा ।।

---●---

प्रयाण-गीत

❑ कल्याणमल गोयल झण्डेवाला
सवाई माधोपुर (राज.)

अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ़ जायें ।
दृढ़ संकल्प हमारा है यह, स्वयं लक्ष्य तक चल पायें ।।

●

बाधायें कब रोक सकी हैं, बढ़ने वालों की राहें,
कौन दुराशा दबा सकी हैं सबल चित्त की शुभ चाहें ।
देख रही है राह सफलता, लक्ष्य गीत मिल सब गायें,
अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ़ जायें ।।

●

मिटा सका है कौन कभी, अन्तः प्रेरित उत्साहों को,
बांध सके कब धूमिल बन्धन, उमड़े हुए प्रवाहों को ।
तरुण-चरण चल पड़े जिधर ही, लक्ष्य स्वयं दौड़ा आये,
अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ़ जायें ।।

●

विकट विरोधों के कारण हम, बिल्कुल कभी न घबरायें ;
पद लिप्सा के प्रबल मोह में, कभी न हम पड़ने पायें ।
एकाचार विचार एकता से, सब जन-मन खिल जायें
अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ़ जायें ।।

●

तोड़ गिरायें जीर्ण-शीर्ण सब, रूढ़िवाद की दीवारें,
परम्परागत झूठी शानें, सभी मिटायें मिल सारे ।
नवयुग के इतिहास पृष्ठ में, अपना नाम लिखा पायें,
अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ़ जायें ।

●

एक रुपया एक ईंट दे, अग्रसेन-पथ अपनायें,
कर कल्याण समाज-देश का, जन-जन जीवन विकसायें ।
मिटा विषमता, शान्ति-निकेतन, अग्रवंश को चमकायें,
अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ़ जायें ।।

---●---

जय अग्रसेन ! जय अग्रसेन !!

❑ दुलीचन्द 'शशि'
हैदराबाद

जय अग्रसेन, जय अग्रसेन ।
जय गौरव-गरिमा के निशान, जय-जय समता के स्वाभिमान ।
जय प्रखर-ज्योति के उन्नायक, जय जय करुणा के कीर्तिमान ।
हो गए सभी वे श्रद्धानत, जिस-जिस के तुम पर उठे नयन ।
जय अग्रसेन, जय अग्रसेन !

इतिहास गवाही देता है, तेरे उन पुण्य प्रतापों की ।
लक्ष्मी का चिर वरदान मिला, तब सांस रुकी सन्तापों की ।
सबके समान से होते थे, तेरे शासन में दिवस-रैन ।
जय अग्रसेन, जय अग्रसेन !

तुमने सबको सुख दान दिया, शासन का मंत्र महान दिया ।
संस्कृति की पूजा की तुमने, शासक का प्रबल प्रमाण दिया ।
हर पीड़ित को अनुराग दिया, सुख-समता तेरी अमर देन ।
जय अग्रसेन, जय अग्रसेन !

हिंसा को देश से निकाल दिया, प्राणी-प्राणी को प्यार दिया ।
जन-जन को इतनी गरिमा दी, हर उर में नेह उतार दिया ।
धरती से लेकर अम्बर तक, शाश्वत हैं तेरे अमर बैन ।
जय अग्रसेन, जय अग्रसेन !

---●---

मैं करूंगी वन्दना

❑ गिरिजा देवी 'निर्लिप्त'

युग पुरुष ! युग-युग तुम्हारी मैं करूंगी वन्दना ।।

लोक के कल्याण हित उत्सर्ग जीवन कर गये,
डाल आहुति यज्ञ में आलोक सौरभ भर गये;
दे रहा सम्बल सबल उस धवल की वन्दना ।।१।।

सत्य के पथ में सदा बन ज्योति जो आगे बढ़े,
जो सुमन बनकर जननि के शीश पर सादर चढ़े;
जो उठे आगे समर में उन चरण की वन्दना ।।२।।

चूम कर किरण सुनहरी साध ले सरसिज खिले,
झूल मलयज के हिंडोले पंक में फिर जा मिले,
जो सजे मां मुकुट में उस कमल की वन्दना ।।३।।

जाति को जीवन दिया निर्माण में निर्भय बढ़े,
जो बनाते राह उन्नति के शिखर पर जा चढ़े;
पथ प्रदर्शक अग्रजन के पद युगल की वन्दना ।।४।।

सिंधु से पाकर सुधा सुर फूलने फलने लगे,
पर चराचर विश्व के विष-ज्वाल में जलने लगे;
जो फले अमरत्व बनकर उस गरल की वन्दना ।।५।।

प्यार है अपनों को और आंसू भी प्रिय जन के लिये,
धन्य वह बलिदान जिसको अर्घ्य दुश्मन भी दिये;
जो भरे अरि-मृत्यु पर उन दृग सजल की वन्दना ।।६।।

---●---

अग्रसेन आदर्श हमारे
हमको प्राणों से प्यारे

❑ विष्णुचन्द्र गुप्त
दिल्ली

अग्रसेन आदर्श हमारे
हमको प्राणों से प्यारे ।
नृपवल्लभ के राज दुलारे,
अग्रवंश के ध्रुव तारे ।
अग्रसेन आदर्श हमारे ।
हमको प्राणों से प्यारे ।।

शौर्य पराक्रम की प्रतिमा थे,
सत्य-अहिंसा के पालक,
साम्य योग के शिल्पकार थे ।
मानवता के शुभ चालक ।।
समता के आधार बिन्दु थे,
अग्रवंश के ध्रुव तारे ।
सिद्धान्तों के मौन व्रती थे,
रिद्धि-सिद्धियों के दाता ।
अग्रवंश की दिव्य दृष्टि थे,
शुभ संकल्पों के दाता ।।
भीष्म पितामह आदर्शों के,
अग्रवंश के ध्रुव तारे ।

अग्रोहा के शासक थे वे,
अग्रवंश के संस्थापक ।
न्याय-नीति की गरिमा थे वे
गोत्र प्रथा के थे व्यवस्थापक ।।
चिन्तन के अभिनव स्वरूप थे,
अग्रवंश के ध्रुव तारे ।
अग्रसेन आदर्श हमारे
हमको प्राणों से प्यारे ।

अग्रसेन की अमर कहानी

❑ भाई परमानन्द
जनकवि, हिसार (हरियाणा)

सुनो सुनो हे दुनियां वालों अग्रसेन की अमर कहानी ।
अग्रसेन का जीवन कैसा जैसे गंगा मां का पानी । सुनो.....

प्रताप नगर के राजा वल्लभ के घर जन्म था पाया ।
द्वापर युग के अन्तकाल में महापुरुष यह आया ।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण में गौरव था छाया ।
महा प्रतापी अग्रसेन का देवर्षि गुण गाया ।

महालक्ष्मी सदा सहाई विघ्नविनाशक मां कल्याणी । सुनो.....

नागराज महीधर की कन्या से ब्याह रचाया ।
मिली माधवी अग्रसेन को धन जन पशु धन पाया ।
महाप्रतापी अग्रसेन से इन्द्रदेव घबराया ।
इन दोनों का श्री नारद ने फिर से हाथ मिलाया ।

भले जनों की धन्य कमाई सफल हुई नारद की बानी । सुनो.....

शादी करके अग्रसेन जी यमुना तट पर आये ।
महालक्ष्मी का तप करने संग माधवी लाये ।
हुई प्रकट जब महा लक्ष्मी नव दम्पति हरषाये ।
जुग-जुग जियों सदा सुख पाओ श्रीमाता के आशिष पाये ।

बनो गृहस्थी उस आश्रम के जिसका भरते हैं सब पानी । सुनो.....

बने अग्रगण राज्य जगत में नवतरंग मन भाई ।
अग्रसेन ने अग्रोहा में नगरी एक बसाई ।
महल माडियां नई अटारियां उपवन ताल तलैया ।
बीच नगर में सुन्दर मन्दिर जहां लक्ष्मी मइया ।

वैश्य वंश की राजधानी का गुण गाते थे संत और ज्ञानी । सुनो.....

अग्रसेन ने अग्रोहा और आगरा शहर बसाया ।
सूरसेन को दिया आगरा अग्रसेन सुख पाया ।
गऊ ब्राह्मण के परमहितैषी नाम जगत में पाया ।
साधु सज्जन वैश्य महाजन का सन्मान बढ़ाया ।

अट्ठारह गणप्रतिनिधियों से सदा सुचालित थी राजधानी । सुनो.....

एक लाख परिवार बसा कर महिमा जग में पाई ।
गर्ग मुनि की आज्ञा पाकर हृदय कली मुसकाई ।
करो अठारह यज्ञ वीरवर शोभा बढ़े सवाई ।
जिस ने यज्ञ किये जीवन में उनकी जग में धन्य कमाई ।

अग्रसेन और शूरसेन ने गर्गमुनि की आज्ञा मानी । सुनो.....

ऋषि मुनि और देव महाजन दूर दूर से आये ।
बड़े बड़े विद्वान् धुरन्धर अगरोहा में आये ।
ब्रह्मा के आसन पर बैठे गर्ग मुनि मन में हरषाये ।

17 यज्ञ हुए जब पूरण मन में जागी इक पशेमानी । सुनो.....

यज्ञों में पशु बलि का देना पापकरम है भाई ।
नीच कर्म से सदा पातकी नरककुण्ड में जाई ।

वैश्यजनों का परम धर्म है पशु का पालन करना ।
अपने कुल की मर्यादा में मिलकर जीना मरना ।
हिंसा करना महा पाप है, हिंसा कभी न करना ।

ऐसे यज्ञ कभी नहीं करना जिसमें होवे जीव की हानि । सुनो.....

वैश्य जनों के हृदय पटल पर खिंच गई गहरी रेखा ।
सदा निरामिष भोजन करते वैश्य जनों को देखा ।
दया धर्म से अग्रवालों की जगी भाग्य की रेखा ।
परहितकारी जनहितकारी रखते हैं यह सच्चा लेखा ।

वैश्यवंश की कुरबानी से अवगत हैं दुनिया के प्राणी । सुनो.....

गर्ग गौन और गोयल मित्तल जिन्दल सिंगल प्यारे ।
बंसल कंसल तिंगल ऐरन बिन्दल मंगल सारे ।
धारण, ठिंगल तायल गोभिल कुच्छल गवन हमारे ।
अग्रसेन के राज्य गगन के सुन्दर सभी सितारे ।

इन्हीं अठारह श्री वंशों से इनकी शोभा जग ने जानी । सुनो.....

अग्रसेन ने नीति धर्म की ऐसी रीति चलाई ।
दीन दुःखी को गले लगाया समझा अपना भाई ।
एक लाख परिवार में रीति-नीति यह फैलाई ।
एक ईंट रुपया देकर करो बराबर के तुम भाई ।

ऐसी करनी से जग जाने जीवन सफल हुई जिन्दगानी । सुनो.....
रहन सहन हो सीधा सादा बोलें प्रेम से मीठी बानी । सुनो.....

---●---

एक हरियाणवी कविता

म्हारे मन में लगी लगन, अग्रसेन के नाम की

❑ अनाम

शाम सुख, हिसार (हरियाणा)

कंडक्टर जी टिकट बणादें, मनै अग्रोहा धाम की ।
म्हारे मन में लगी लगन सै, अग्रसेन के नाम की ।।
महालक्ष्मी माता का औठे, मन्दिर बनरया भारी सै ।
दर्शन करने दूर-दूर तै, आवै नर और नारी सै ।।
करां वंदना हम भी जा कै, मैया जी के नाम की ।
म्हारे मन में ..... ।।

बैठी है औढे माता शारदा, लिये हाथ में वीणा जी,
दर्शन करके माता का, चाहवां चरणामृत पीणा जी,
झोली फैलाके करां याचना, हम तो विद्यादान की,
म्हारे मन में ..... ।।
श्री बल्लभ पुत्र अग्रसेन जी, सिंहासन पर विराज रहे ।
लिये हाथ तलवार पितामह, मंद-मंद मुस्काय रहे ।।
इननै रीत चलाई थी, एक ईंट रपिया दान की ।
म्हारे मन में ..... ।।

गुफा बीच में मां वैष्णों नै, अपना दरवार सज्जा राख्या ।
नव दुर्गा और भैरव बाबा, खेल अजब रच्चा राख्या ।।
माटी तै तन करुं पवित्र, मैं इस पावन धाम की ।
म्हारे मन में ..... ।।
जो भूखा नै भोजन दे रह्या और प्यास न पाणी जी ।
अग्रोहा में आन विराजे, अमरनाथ बर्फानी जी ।
कब लग करुं बड़ाई भाई, मैं इस सुन्दर स्थान की ।
म्हारे मन में ..... ।।

बाला जी का मन्दिर की, शोभा ना जाये बखानी जी ।
नब्बे फुट की भव्य प्रतिमा, कदे देखी, सुनी, ना जानी जी ।
विनती गाणे को जी चाह्रया, उस रामभक्त हनुमान की ।
म्हारे मन में ..... ।।

श्री अग्रसेनजी महाराज की आरती

❑ अनाम

जय हो जय हो तुम्हारी जय हो, श्री अग्रसेन महाराज ।
हे अग्रवाल कुल के कर्त्ता
गो द्विज संतति के हो भर्त्ता
धन वैभव की रखकर समता, श्री अग्रसेन महाराज ।
अग्रोहा में अवतीर्ण हुए
बहु धूमधाम से यज्ञ किए
जिनसे प्रचलित सब गोत्र हुए, श्री अग्रसेन महाराज ।
थे क्षत्रिय कुल के उजियारे
बहु सुभट दुष्ट दल सहारे
उत्तर भारत के रखवारे, श्री अग्रसेन महाराज ।
जब वैश्य वर्ण स्वीकार किया
वाणिज्य अहिंसा धार हिया
तत्पालन का आदेश दिया, श्री अग्रसेन महाराज ।
झूंठी मर्य्यादा ठुकरावें
दिन दिन उन्नति करते जावें
हम सच्चे वंशज कहलावें, श्री अग्रसेन महाराज ।

&&&●---

शिवशंकर भोला भंडारी, सबके मन नै भा रह्या सै ।
अग्रोहा में आकै शंभू अग्रेश्वर नाम धराया सै ।।
जय बोला बम-बम भोले, जय अग्रेश्वर भगवान की ।
म्हारे मन में ..... ।।

शक्ति सरोवर बन रहया सुन्दर, लक्खी तालाब का रूप नया ।
सुर-दानव मथ रहे समन्दर, श्री हरि नै कच्छप रूप धरया ।।
घणे दिनां है मन मै थी, भाई इसमें करण स्नान की ।
म्हारे मन में ..... ।।

---●---

अग्रसेन गौरव

❑ चिरंजीलाल अग्रवाल
दिल्ली

प्रस्तावना

'अग्रवंश के हम गौरव हैं, जाति-धर्म के अभिमानी ।
भारत मां के परम् लाड़ले, कर्मवीर अरु जग-दानी ।
अग्रसेन के हम बालक हैं, अगरोहा की रजधानी ।
राजचिन्ह शोभित मस्तक पर, मर्यादा के हम मानी ।।
लक्ष्मीजी के परम उपासक, सुख-सम्पति के अधिकारी ।
कृषि, गौरक्षा, वणिज के कर्त्ता, दीन दुखी के हितकारी ।।'

वंश परिचय

'था वैशालक वंश धरा पर, सतयुग में गौरवशाली ।
स्वयम्भु मनु की सन्तति हैं, वैश्य वर्ण वैभवशाली ।।
नेदिष्ट, भलन्दन, मांकील, जिसकी विभूतियां कीर्तिमान ।
मन्त्रों की रचना करते थे, यज्ञों का पावन विधान ।।
धनपाल हुए थे इसी वंश में, थे कुँवर सम सम्पत्तिवान् ।
दक्षिण भारत के शासक थे, प्रताप नगर के नृपति महान् ।।
अतुलित दानी त्रेता युग के, राष्ट्र-धर्म का पालन करते ।
अपनी सम्पत्ति बांट देश में, दीन दुःखी का थे दुःख हरते ।।
नेमिनाथ ने प्रकटित होकर, निज बल पर नेपाल बसाया ।
गुर्जर नृप ने निज विक्रम से, गौरवमय गुजरात बनाया ।
हुए हटीहर इसी वंश में, शत पुत्रों के पिता महान ।
नृपति महीधर जन में इसमें, वल्लभ नृप जिनकी सन्तान ।।
अग्रसेन थे ज्येष्ठ सुवन, अग्रवंश के पिता महान् ।
शूरसेन थे अनुज इन्हीं के, मथुरा नगरी मन्त्रि सुजान ।।

अग्रसेन का इन्द्र से संघर्ष

द्वापर का था अन्त सन्धि युग, नाग जाति का था उत्थान ।
नृपति कुमुद थे नाग शिरोमणि, सुता माधवी परम सुजान ।।
हुआ इन्द्र आसक्त वधू पर, फैलाया था उसने जाल ।
अग्रसेन से हो आकर्षित, माधवी ने डाली जय माल ।।
चुना अग्र को नाग सुता ने, पाकर के उसको गुणवान् ।
प्रेम भाव से किया प्रफुल्लित, सफल हुए उसके अरमान ।।
क्रोधित इन्द्र हुआ नरपति पर, रोकी वर्षा क्षुब्ध हुआ ।
त्राहि त्राहि मच गई धरा पर, मानव को अति दुःख हुआ ।।
अग्रसेन ने किया युद्ध पर, जीत न सुरपति को पाया ।
करी सन्धि देवेश इन्द्र से, नारद ने नृप को समझाया ।
अग्रसेन थे दुःखी असन्तुष्ट, करने को अपना उत्थान ।
छोड़ नगर दक्षिण का सुन्दर, उत्तर भारत किया प्रयाण ।।

महालक्ष्मी की आराधना

मथुरा में यमुना के तट पर, करके तप सन्तुष्ट किया ।
मार्गशीर्ष के शुक्ल पक्ष में, महालक्ष्मी को सिद्ध किया ।।
हुई प्रसन्न पुत्र मैं तुझसे, होंगे सफल सभी अरमान ।
अग्रवंश का हो संस्थापक, देती मैं तुझको वरदान ।।
अखिल भूमि तेरे कुल में, वैभव से पूरित होगी ।
तेरे कुल में जाति, वर्ण के, नेताओं की सृष्टि होगी ।।
कुल आदि स्वरूप मूल में, तेरा नाम विश्व जानेगा ।
तेरी अग्रवंशीय प्रजा का, तीन लोक में आदर होगा ।।
तेरे भुज बल का प्रसाद, पूर्ण जगत में व्यापित होगा ।
युगों-युगों तक पूर्ण सिद्धि का, तू अधिकारी होगा ।।
मेरी पूजा तेरे कुल में, जब तक बनी रहेगी ।
तब तक तेरे अग्रवंश पर, मेरी कृपा सर्वदा होगी ।।

अग्रोहा की स्थापना

थे कृतार्थ श्री अग्रसेन जी, किया कोलपुर को प्रस्थान ।
नृपति महिधर नाग-सुता का, करके परिणय बने महान् ।।
एक नया साम्राज्य बनाया, अग्रसेन ने निज पौरुष से ।
अग्रोहा का नगर बसाया, अग्रसेन ने निज विक्रम से ।।
नया दुर्ग निर्माण किया जो, कहता आज कहानी है ।
याद दिलाता बलिदानों की, जिसकी कथा पुरानी है ।।
सुखद सरोवर निर्मित करके, लक्ष्मी का मन्दिर बनवाया ।
अग्रसेन ने पुलकित होकर, वैभव का सब साज सजाया ।
अग्रराज्य था मारवाड़, पूरब में वाराणसी तट तक ।।
थे अष्टदश गण अनुयायी, गोत्र अठारह, धारण करते ।
अग्रसेन थे इनके नेता, पूज्य-पिता सम पालन करते ।।

यज्ञों का विधान

अग्र-नृपति श्री अग्रसेन ने, नाग वंश में किया विवाह ।
नाग नृपति से मैत्री करके, राजनीति का किया निर्वाह ।।
पालन करके आर्य धर्म का, फिर यज्ञों का किया विधान् ।
अपने अष्टदश पुत्रों को दीक्षित करके बना महान् ।।
गर्ग आदि ऋषियों ने मिलकर, देवों का आह्वान किया ।
जला यज्ञ की अग्नि धरा पर, अश्वों का बलिदान किया ।।
सत्रह यज्ञ हुए पूरे, पर अष्टादश में विघ्न हुआ ।
देख अश्व की दीन दशा को, करुणा का संचार हुआ ।।
जागा भाव अनोखा मन में नए धर्म का सृजन हुआ ।
सुनी अश्व की वाणी, जो था करुणामय विनती करता ।।

प्राणों की रक्षा के हित था, निज भाषा में वह कहता ।।
क्या यह धर्म सत्य मानव का, यज्ञों में हिंसा करना ।
पाने को वैभव जगती में, प्राणी का नाशक बनना ।।
मानव पिता नहीं तुम भूपति, जीव मात्र के तुम रक्षक हो ।
पालक हो इस अखिल-राज्य के, दीन दु:खी के सर्वस हो ।।
करो न हिंसा मेरी प्रभुवर, मैंने सेवा रण में की है ।
शरणागत् मैं नृपवर पालन, प्राणदान दो यह विनती है ।।
हुए प्रभावित अग्रसेन जी, पशु की करुण गिरा से ।
पछताते थे दु:खी हृदय से, हिंसा की ज्वाला से ।।
करो यज्ञ की रोक तुरन्त ही, हिंसा का इसमें क्या काम ।
शूरसेन से कहा, नृपति ने, करो घोषणा यह सुख-धाम ।।
मेरा राज्य तपो-वन होगा, शान्ति त्याग का व्रत बलवान् ।
जीवन की सन्ध्या बेला में करता, अपना सर्वस दान् ।।

स्वर्णारोहण

दिया राज्य युवराज विभु को, अग्रसेन ने तप साधा ।
पंच गोदावरी के तट पर, फिर दक्षिण में व्रत साधा ।
हरि चरणों में हुए लीन वे, कीर्ति अमर वसुधा में धाई ।
बीते अगणित वर्ष उन्हें पर, भूल न सके उनके अनुयायी ।।
स्मरण करते मधुर भाव से, श्रद्धांजलि अर्पित करते ।
गाते उनके गौरव-पावन, चरण चिन्ह पर इनके चलते ।।
अग्र-जाति की सन्तति हम सब, उनके गुण नित गाए ।
आदर्शों पर उनके चलकर, जीवन में हम कीर्ति कमाए ।।
भारत मां के श्रेष्ठ सुमन, आर्य जाति के नृपति महान् ।
शत्-शत् श्रद्धान्जलि चरणों पर, दो अपना अनुपम वरदान् ।।

---●---

अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल

❑ दुलीचन्द 'शशि'
हैदराबाद

वह कौन, कहो जिसने जन-जन को नया अधिमान दिया ।
वह कौन, कहो अग्रोहा को जिसने नव रूप प्रदान किया ।
वह कौन, कहो जिसने समता का नव आलोक बिखेरा था ।
वह कौन, कहो जो लोक तन्त्र का अद्‌भुत रंग-चितेरा था ।

जो समाजवाद का अधिनायक
सुख समता जिसकी अमर देन
वह अग्रसेन-वह अग्रसेन-वह अग्रसेन ।

वह कौन ग्राम, जहां बन्धु भावना बढ़ी पली परवान चढ़ी ।
वह कौन ग्राम, कवियों ने जिसकी गौरव गाथा खूब गढ़ी ।
वह कौन धरा, जिसके आंचल में पौरुष खुलकर खेला था ।
वह कौन धरा, जिसके रज-कण में सुख-समता का मेला था ।

वह कौन ग्राम जिसकी गरिमा ने
था जन-जन को मोहा,
वह अग्रसेन-वह अग्रसेन-वह अग्रसेन ।

वह कौन, कहो जो अग्रसेन की वाणी समझ नहीं पाए ।
वह कौन, कहो जो प्यार परस्पर अब तक बांट नहीं पाए ।
वह कौन, कहो जिसके बस में धन-जन की ताकत बहुत बड़ी ।
वह कौन, कहो है जन्म भूमि जिनकी अब तक वीरान पड़ी ।

जो अग्रसेन की प्रतिमा पर
हर वर्ष बढ़ाते फूल-माल ।
वह अग्रसेन-वह अग्रसेन-वह अग्रसेन ।

---●---

तभी तुम्हारा जीवन सार्थक

❑ दुलीचन्द अग्रवाल
कलकत्ता

हे अग्रसेन !

सत्य, अहिंसा, साम्यवाद के प्रथम प्रवक्ता ।
मां लक्ष्मी के सेवक साधक, धर्म नियंता ।।

अग्रोदक महाराज अक्षय निधि से ।
भरा अग्र भण्डार लाभ शुभ रिद्धि सिद्धि से ।।

आ करोड़ों अग्रवाल तब सुयश पताका ।
फहराते हैं जग में लेकर दूनी आशा ।।

भूल गये पर अग्रोहा को जन्म भूमि को ।
पावन परम महान तपोमय कर्म भूमि को ।।

ध्वस्त त्रस्त अग्रोहा, उजड़ा सा खण्डहर है ।
अग्र कीर्ति क्यों हुई आज इतनी नश्वर है ।।

करो पुनः निर्माण लुप्त सुप्त गौरव का ।
अग्रसेन की धरते के मणिमय वैभव का ।।

रचो नया इतिहास पुराने उन टीलो पर ।
गत अतीत को चमका दो, फिर से तुम श्रम कर ।।

तभी तुम्हारा जीवन सार्थक वैभव सार्थक ।
गौरव सार्थक, अनुभव सार्थक दुनिया सार्थक ।।

---●---

अग्रसेन महाराज

❑ माया गोविन्द

कीर्ति पताका फहरती, जिनकी बीच समाज
'अग्रोहा' के पूर्वज, अग्रसेन महाराज ।।
ना तो वो अवतार थे, कोई ना वो थे भगवान ।
अग्रसेन सच्चे अर्थों में, थे सच्चे इन्सान ।।

सूझ-बूझ चतुराई-शौर्य से, किये अनोखे काम ।
'अग्रोहा' इक नगर बसाया, किया वंश का नाम ।।
अट्ठारह यज्ञों के कर्ता, शांति अहिंसा धर्म ।
दयावान दानी उदार थे, सुरुचि-सुभग, शुभ-कर्म ।।

दीन-दु:खी की मदद, कारनामे हैरत-अँगेज ।
वशीभूत हो गया इन्द्र भी, देख के उनका तेज ।।
लोकतन्त्र के रक्षक थे वो, रण-कौशल के ज्ञाता ।
वैश्य-गणों के मुकुट-मणी थे, वैश्य-धर्म निर्माता ।।

विविध वंश से जोड़ के नाते, दिया उन्हें सम्मान ।
अग्रसेन सच्चे अर्थों में, थे सच्चे इन्सान ।।
राज्य में रखते सभी प्रजागण, अनुशासन का ध्यान ।
कर्तव्यों में सदा रहे रत, वल्लभ-पुत्र महान ।।

वो थे सच्चे समाजवादी, मेटीं सभी कुरीत ।
कोई बड़ा न छोटा कोई, सबकी सबसे प्रीत ।।

कर्मयोग का पाठ पढ़ाते थे सबको श्रीमान ।।
अग्रसेन सच्चे अर्थों में थे सच्चे इन्सान ।।

अपने आदर्शों के बल पर, महापुरुष कहलाये ।
पितातुल्य-शासक बनकर, जनता के कष्ट मिटाये ।।
हर निर्धन के भाग्य की, हो जाती थी पल में जीत ।
लाख कुटुम्बों से मिल जाती, इक मुद्रा इक ईंट ।

करके फिर व्यापार वो निर्धन बनता था धनवान ।
अग्रसेन सच्चे अर्थों में थे सच्चे इन्सान ।।
अग्रवाल वंशज है इनके, है अट्ठारह-गोत्र ।
गोत्र-अट्ठारह जैसे, पावन-पुस्तक के हो स्रोत ।।

सुख-सम्पन्न घराने हैं ये, इनका है स्वामित्व ।
सारे जग में व्याप रहा है बस इनका अस्तित्व ।।
देश नहीं है कोई ऐसा जो इनसे अन्जान ।
अग्रसेन सच्चे अर्थों में थे सच्चे इन्सान ।।

अग्रसेन के प्यार का कर्ज़ा, मिलकर सभी चुकाओ ।
अग्रसेन के आदर्शों को सब मिलकर अपनाओ ।।
इस समाज में फैल चुकी, जो कुरीतियां हटवायें ।
वही सही अर्थों में अग्रसेन-वंशज कहलायें ।।

बन्द दहेज-प्रथा हो तब रिश्तों का हो सम्मान ।
अग्रसेन सच्चे अर्थों में थे सच्चे इन्सान ।।

---●---

याचना

❑ बालकवि बैरागी
मनासा (म.प्र.)

हे अग्र देव !
हे पुण्य पिता !
हे आदि पुरुष !
हे महा प्राण !
हम नत मस्तक हैं श्रद्धा से
हैं विनत भाल ।
दो शक्ति हमें
दो आराधन
हम पूर्ण करें वह अनुष्ठान
जो लोकराज के उद्‌गाता बन
तुमने कभी सहेजा था -
हर्षित हो हमसे
हर मनुष्य
गर्वित हो हमसे
शुचि भविष्य ।
हम वह समिधा हों
वह हविष्य
जिसको तुमने अभिमंत्रित कर
आहुति होने के निमित्त
इस अग्र कोख में भेजा था ।

---●---

द्वितीय खण्ड

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा प्रमाणित "अग्रवाल ध्वज"

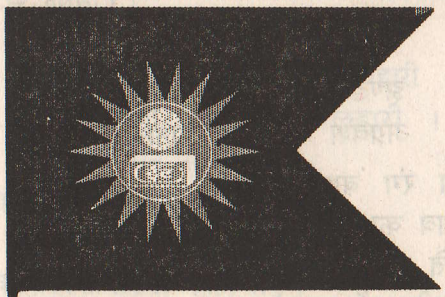

- सूर्य की 18 किरणें 18 गोत्रों की सूचक हैं।
- रुपया और ईंट महाराज अग्रसेन के समाजवाद के प्रतीक हैं।
- ध्वज का रंग केसरिया है।
- सूर्य, रुपया तथा ईंट का रंग सिल्वर है।

अग्रवाल-ध्वज

गौरवशाली अग्रवंश का
ध्वज केसरिया नमो नमो ।
युग निर्माता अग्रसेन की
संघ निशानी नमो नमो ॥

अग्रवाल झण्डा गान

❑ विष्णु चन्द्र गुप्त
दिल्ली

झण्डा लहर लहर लहराये,
अग्रवंश की कीर्ति सुनाये ।

केसरिया रंग बहुत सुहाये,
त्याग भाव का पाठ पढ़ाये ।
सहानुभूति व प्रेम त्याग को,
हम सब जीवन में अपनाये ।।१।।

अठारह किरणों का गोला,
गोत्रों की बोली है बोला ।
राज्य व्यवस्था को बतलाकर,
अग्रसेन की याद दिलाये ।।२।।

एक रुपया संग ईंट जड़ी है
इसमें समता बहुत बड़ी है ।
समाजवाद की यही कड़ी है,
अग्रोहा की याद दिलाये ।।३।।

ऊपर नीचे कूल बने हैं,
मिले बीच अनुकूल घने हैं ।
ऊँच-नीच का भेद मिटाकर,
समता हम जीवन में लाये ।।४।।

झण्डा लहर लहर लहराये,
अग्रवंश की कीर्ति सुनाये ।

---●---

अग्र-ध्वज-वन्दना

❑ वैद्य निरंजनलाल गौतम
दिल्ली-32

जयति अग्र-ध्वज व्योम बिहारी ।
केसरिया रंग पर बलिहारी ।।
इस ध्वज को मन से फहरायें,
समाजवाद का वाद गुंजायें ।
उठे राष्ट्र, सब मिलकर गायें,
जीवन अपना सफल बनायें ।।१।।

उद्यम कर उद्योग चलायें,
कृषि, गोरक्षा, वाणिज्य बढ़ायें ।
यही धर्म धर वैश्य कहायें,
अग्रसेन के यश गुण गायें ।।२।।

विद्या-मन्दिर क्षेत्र चलायें,
वेद पढ़ें और यज्ञ रचायें ।
जनहित द्वारा नाम कमायें,
यही प्रेरणा ध्वज से पायें ।।३।।

अग्रध्वजा के नीचे आयें,
बिखरी जाति संगठित पायें ।
तन, मन, धन से इसे उठायें,
तब हम अग्रवाल कहलायें ।।४।।

जयति अग्रध्वज व्योम बिहारी ।
केसरिया रंग पर बलिहारी ।।

---●---

झण्डा गीत

ध्वजा हमारी केसरिया

❑ मुरारी लाल बंसल
फिरोजाबाद (उ.प्र.)

ध्वजा हमारी केसरिया, जय अग्र हमारा नारा है।
भारत के कण-कण में अंकित, गौरव ज्ञान हमारा है ।।

●

हम हैं वही जिन्होंने सदियों तक साम्राज्य चलाये थे,
हम हैं वहीं जिन्होंने बह्मा-विष्णु से वर पाये थे ।।
हम से सिकन्दर तो क्या देवराज तक हारा है ।
ध्वजा हमारी केसरिया, जय अग्र हमारा नारा है ।।१।।

●

कौन नहीं परिचित है जग में, अग्रवंश सन्तानों से ।
दिये हुए वचनों को पाला, बढ़ कर अपने प्राणों से ।।
सत्य अहिंसा प्रेम वीरता न्याय धर्म उर धारा है ।।
ध्वजा हमारी केसरिया, जय अग्र हमारा नारा है ।।२।।

●

छत्र-चँवर नौबत निशान के, हम ही केवल अधिकारी ।
भाट गा रहे धन वैभव की, यश गौरव महिमा भारी ।।
आज जाति के लिए हमारा, ये ही कौमी नारा है ।
ध्वजा हमारी केसरिया, जय अग्र हमारा नारा है ।।३।।

---●---

ध्वज-वंदना

❑ बाबूलाल अग्रवाल
छतरपुर

ध्वजराज तुम्हें शत् शत् प्रणाम ।
जीवन के शाश्वत् मूल्यों के हे चिर प्रतीक तुमको प्रणाम ।।
हे अग्रवंश यश विस्तारक समता की ज्योतित दीप्ति लिये ।
अनुराग त्याग युक्त वैभव में सहयोग अहिंसा सत्य लिये ।।
केसरिया अरुणिम आभा में जीवन की ज्योति जगी जबसे ।
नव सृष्टि देखती जब शिशु सी पालन की कीर्ति पगी तबसे ।।
सुख शांति बहाती रस धारा के हे प्रतीक ! तुमको प्रणाम ।
ध्वजराज तुम्हें शत् शत् प्रणाम ।
अग्रोहा कीर्ति दिवाकर हे पथ नूतन दिखलाया तुमने ।
रुपया ईंटों की परिपाटी का वैभव यश फैलाया तुमने ।।
इतिहास विधाता के कर में पथ ज्योति बनो हे ज्योति चरन ।
लक्ष्मी के पूतों के बल हे लक्ष्मी का हो फिर आह्वान ।।
दुर्वृत्ति दलन हे वीतराग, हे अनुरागी ! तुमको प्रणाम ।
ध्वजराज तुम्हें शत् शत् प्रणाम ।

---●---

झण्डा अभिवादन

❑ भाई परमानन्द
हिसार (हरियाणा)

अग्रवंश अधिनायक जय हो
जन मन के सुख दाता
अग्रोहा गण राज्य में कोई
रहा न भूखा नंगा
गऊ ब्राह्मण ही सदा बहाएं
दूध ज्ञान की गंगा

ईंट रुपैया बांटे
दुखियों के दु:ख काटे
समता पाठ सिखाता
अग्रसेन के समता ध्वज को
जन जन शीश झुकाता

जय हे, जय हे, जय हे,
जय, जय, जय, जय हे ।

---●---

ध्वज वन्दना

❑ कल्याणमल गोयल झण्डेवाला
सवाई माधोपुर (राज.)

गौरवशाली अग्रवंश का, ध्वज केसरिया नमो नमा ।
युग निर्माण अग्रसेन की, संघ-निशानी नमो नमो ।।
त्याग तपस्या का केसरिया
यश गाथा लहराता है ।
अग्रवंश का बच्चा-बच्चा
झूम-झूम फहराता है ।।
अष्टादश किरणों का गोला
गोत्र प्रमाण बताता है ।
एक रुपया ईंट मध्य में
बन्धु भावना गाता है ।।
अग्र वंश के इस गौरव की, गौरव गाथा नमो नमो ।
गौरवशाली अग्रवंश का, ध्वज केसरिया नमो नमो ।।
युग के नव जीवन में नव-
पथ निर्माण कराता है ।
एक रहो व नेक बनो का,
शुभ सन्देश सुनाता है ।।
अग्रसेन की विमल कीर्ति यह,
घर-घर में फैलाता है ।
समता-साम्य समाज वाद का,
पाठ हमें सिखलाता है ।।
मात्-भाव के इस प्रतीक की अग्र-भावना नमो नमो ।
गौरवशाली अग्रवंश का ध्वज केसरिया नमो नमो ।।
आओ-आओ करें प्रतिज्ञा,
इसे न झुकने देंगे हम ।

ध्वज वन्दना

❑ राजेन्द्र प्रसाद गर्ग, 'राजेश'
कलकत्ता

हे ध्वज ! बारम्बार प्रणाम ।
तुमको बारम्बार प्रणाम ।।
केसरिया धरती ये तेरी
और चमकता दिनकर ।
अग्रजाति का यूं ही फैले
सौरभ प्रकाश भी घर घर ।।
अट्ठारह गोत्रों की द्योतक,
यह अट्ठारह किरणें ।
अंकित मध्य ईंट और मुद्रा
नीति हमारी वर्णे ।।
अग्रवंश की अमर पताका
सुन्दर ललित ललाम ।
हे ध्वज, बारम्बार प्रणाम
तुम को बारम्बार प्रणाम ।

---●---

सिर जाये पर आन न जाये,
हँस-हँस कर बलि देंगे हम ।।
इसकी छाया में जन-जन का,
मिल कल्याण करेंगे हम ।
शान्ति-निकेतन अग्रसेन के,
सपने सत्य करेंगे हम ।।
अग्रोहा के ज्योतिर्मय की, निर्मल आभा नमो नमो ।
गौरव शाली अग्रवंश का, ध्वज केसरिया नमो नमो ।।

---●---

तृतीय खण्ड

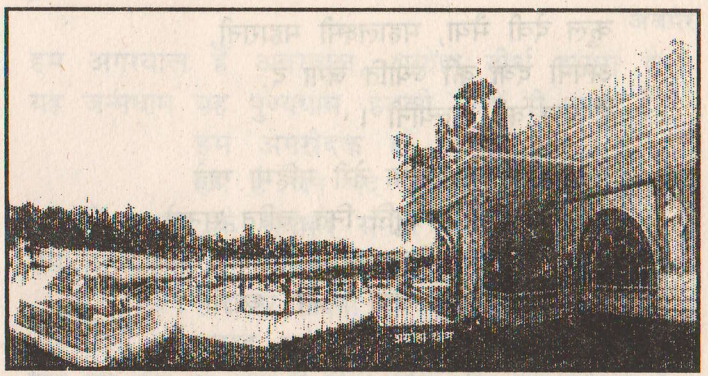

अग्रोहा-दर्शन

स्नेह प्यार आदर्शों की जिस ठौर त्रिवेणी बहती थी ।
गौरव गाथा उस धारती की इन संदर्भों में कहती थी ।।
अग्रवाल कुल गरिमा के थे छत्र जहां पर तने हुए ।
उसको समान हक मिलने के कानून जहां बने हुए ।।

महालक्ष्मी स्तुति

❑ शैल चतुर्वेदी
बम्बई

कुल देवी मैया, महालक्ष्मी महारानी,
अपनी दया की ज्योति जगा दे,
हे जग की कल्यानी ।

ब्रह्मादिक तेरी महिमा गाते
नारद मुनि नित चरित सुनाते
ध्यावें तुझको हे नारायणी,
साधु संत और ध्यानी ।

धन वैभव सुख देने वाली
तू ही दुर्गा तू ही काली
वेद पुराण, उपनिषद सारे
कहते तेरी कहानी ।

तेरे चरण के हम हैं पुजारी
कृपा दृष्टि कर, मातु हमारी
अग्रोहा के, अग्रसेन के
वंशज हम सब प्राणी ।

आशिष तेरा जो पाता है
रंक भी राजा हो जाता है
दे वरदान, वरद हाथों से
मातु कृपा वरदानी ।

---●---

अग्रोहा तीर्थ हमारा है

❑ बालकृष्ण गर्ग 'बालक'
अजमेर

हम अगरवाल हैं अगरवाल, अग्रोहा तीर्थ हमारा है ।
यह जन्मधाम यह पुण्यधाम, हमको प्राणों से प्यारा है ।।
हम अगरोदक के हरकारे,
हम हैं जन पद के रखवारे,
हम हैं समाज के सूत्रधार समता को सदा संवारा है ।
हम अगरवाल हैं अगरवाल, अग्रोहा तीर्थ हमारा है ।।
हम पर लक्ष्मी की छाया है,
शारद मां ने अपनाया है,
नित धन-बल मन-बल से पूरित शुचि श्रेष्ठ भरा भण्डारा है ।
हम अगरवाल हैं अगरवाल, अग्रोहा तीर्थ हमारा है ।।
हम छत्र चंवर के अधिकारी
तलवार कलम दोनों प्यारी
केसरियां पगड़ी गादी पर, मणि मुकुट राज में धारा है ।
हम अगरवाल हैं अगरवाल, अग्रोहा तीर्थ हमारा है ।।
हम सिन्धु सभ्यता के साक्षी,
विख्यात विश्व में हैं झाँकी,
इतिहास भरा है गौरव से, ज्यों सूर्य किया उजियारा है ।
हम अगरवाल हैं अगरवाल, अग्रोहा तीर्थ हमारा है ।।
हम हर प्राणी से प्यार करें,
हम शांति अहिंसा नेम धरें,
नर नारी युवक बूढ़े बालक, हित सबका सदा विचारा है ।
हम अगरवाल हैं अगरवाल, अग्रोहा तीर्थ हमारा है ।।

---●---

अग्रोहा को तीर्थ बनाओ

❑ वैद्य निरंजनलाल गौतम
दिल्ली

अग्रवंश के लाल उठो अब
धरा बदल दो समय आ गया
अग्रोहा की माटी में अब
नवजीवन संचार हो गया ।

अग्रोहा की नयी योजना
अहो बुलाती उसकी माटी
खण्डहर भी आह्वान करते
भूल गए क्या निज परिपाटी ।

थैली के मुंह आज खोल दो
हरभजशाह समान बनो तुम
वही उदाहरण प्रस्तुत करदो
अग्रोहा निर्माण करो तुम ।

अग्रोहा तो बने तीर्थ जब
तुम अपना जौहर दिखलाओ
सुनो पुकार जन्म भूमिकी
आज सृजना त्यौहार मनाओ ।

एक ईंट और एक रुपैया
घर-घर से अब तुम ले आओ
उजड़े खण्डहर बोल उठे अब
अग्रोहा को तीर्थ बनाओ ।

---●---

पांचवां धाम

❑ दुलीचन्द अग्रवाल
कलकत्ता

चार धाम की बात पुरानी, बड़ी सुहानी बड़ी लुभानी,
उत्तर में बद्री विशाल है, पश्चिम में कृष्ण विराजमान हैं ।
पूरब में जगन्नाथपुरी है, रामेश्वर दक्षिणाधुरी है,
मध्य भाग सूना-सूना है होता दु:ख दूना-दूना है ।।

●

सत्य अहिंसा साम्यवाद की, जन्मभूमि अग्रोहा थी,
भारतीय दर्शन संस्कृति की, मूलभूमि अग्रोहा थी ।
वह अग्रोहा बुझा-बुझा सा, टीलों में ही दबा-दबा सा,
झुका शीश देखा करता है, दुख करता है सिर धुनता है. ।।

●

आज करोड़ों अग्रवाल, आगे बढ़कर संकल्प करो तुम,
अग्रोहा उद्धार करो अब, अग्रोहा उद्धार करो तुम ।
अग्रवाल मन्दिर का, नव-निर्माण करो तुम,
मां लक्ष्मी कुल लक्ष्मी का, सम्मान करो तुम ।।

●

यज्ञशाला और शक्ति सरोवर, शीला मां की भक्ति धरोहर,
सारे तत्व मिलाकर हो, निर्माण बड़ा ही सुखद मनोहर ।
अग्रवंश का काम यही है, सुनो पांचवां धाम यही है ।

---●---

अग्रजन पद की कथा

❑ शिव शंकर गर्ग
सीकर (राज.)

पंचनद का क्षेत्र मनोहर,
जन पद एक "अग्र" था सुन्दर
प्रजातन्त्र शासन सा उसमें,
सुखी सभी नरनारी जिसमें ।।१।।

अठारह कुल थे आग्रेयगण में,
मुखिया जाते राज सदन में ।
राज काज वे ही करते,
उन्हें सभी "राजा" ही कहते ।।२।।

अग्रोदक राजधानी उसकी,
इन्द्रपुरी सी शोभा जिसकी ।
एक लाख परिवार नगर में,
सब सुविधाएं डगर-डगर में ।।३।।

"राजा" मिल महाराजा चुनते,
"अग्र राज" की पदवी देते ।
"अग्रसेन" भी उनको कहते,
मान पिता सा सब जन देते ।।४।।

"अग्र" नगर में जो जन आता,
ईंट-रुपया हर घर से पाता ।
दु:ख दारिद्र दूर तो जाता,
बन्धु प्रेम वह अद्‌भुत पाता ।।५।।

कृषि-व्यापार सभी जन करते,
संकट में वे शस्त्र उठाते ।
हंस हंस समर भूमि जाते,
दुश्मन से लोहा वे लेते ।।६।।

आया लुटेरा एक यूनानी,
शाह सिकन्दर महा अभिमानी ।
चढ़ आया वह "आग्रेय" गण पर,
युद्ध हुआ का बड़ा भयंकर ।।७।।

अग्रवीर केसरिया कर-कर,
लड़े समर में सब ही डट कर ।
जीत गये थे महा समर पर,
जीत हार से भी थी बढ़ कर ।।८।।

वीर चढ़े सब बलिवेदी पर,
बच्चे-बाल-वृद्ध-रोगी नर ।
प्रजातन्त्र यह नहीं सह पाया,
शोक वहां घर-घर में छाया ।।९।।

अग्रोहा छोड़ा बे मन से,
भारत भर में फैले तब से ।
अग्रवाल वे ही कहलाते
वैश्य कर्म में आगे रहते ।।१०।।

बात यह है बहुत पुरानी,
साख देत विद्वान पाणिनी ।
उन जैसी हो उनकी सन्ताने,
"नूतन" युग तब हमको माने ।।

---●---

जहां समता सदा सुहागिनसा-सोलह श्रृंगार सजाती थी

❑ दुलीचन्द 'शशि'
हैदराबाद

अग्रोहा से चले अग्रजन, बंटते गए कबीलों में ।
स्वर्ण जड़ित इतिहास दवा है, अभी वहां के टीलों में ।।
जिसकी माटी की पावनता, गंगा जल पर भारी है ।
जहां पर करुणा ने कलश भरे, ममता ने बांह पसारी है ।।
जहाँ समता सदा सुहागिन सा, सोलह श्रृंगार सजाती थी ।
जय-विजय जहाँ पर गरिमा की, मेंहदी से हाथ रचाती थी ।।
जहाँ ललनाओं ने जौहर रचे, इतिहासों में यश जोड़ा हैं ।
जहाँ सौष्ठव पगी जवानी ने, हर दुश्मन का मुख मोड़ा है ।।
जहाँ गीत गुंजाते सौरभ ने, अभ्यागत का अभिमान दिया ।
जहाँ प्यार परस्पर बंटता था, गौरव ने स्वर्ण विहान दिया ।।
जहाँ सत्य, अहिंसा दान-धर्म ने, पूरे चारों धाम किये ।
पहरा देता था पुण्य जहां, मेहनत ने यश के जाम पिये ।।
अन्याय, अधर्म, अन्धेरे सब, जहाँ शीश छिपाये करते थे ।
जहां फसलें जश्न मनाती थीं, यश फलता था यश बोते थे ।।
जहां सौम्य-सम्पदा के पनघट, श्रम की पनिहारिन भरती थी।
समृद्धि जहां की धरती पर, सबका अभिनन्दन करती थी ।।
जहां न्याय, दूध से नहाता था, विश्वास भैरवी गाता था ।
रुपया और ईंटों के तोहफे, हर एक नवागत पाता था ।
जहाँ नेह के दीपक जलते थे, आलोकित करते थे गलियां ।
सुख-समता जहाँ लुटाती थी, हर रोज सजीं दीपावलियां ।।

---●---

अग्रोहा की वीरांगनाओ का जौहर व्रत

❑ अनाम

करुण कहानी हृदय विदारक,
जग भर में थी लासानी ।
अग्रोहा की ललनाओं ने,
भीष्म प्रतिज्ञा थी ठानी ।।
नहीं पतित होगी वे अरि से,
नहीं चलेगी मनमानी ।
जौहर की कर प्रथा भंयकर,
दुई अग्नि मय सब रानी ।।
लपटें उठीं अग्नि की बर्बर,
धधक उठी थी चिता विशाल,
कूद-कूद उसमें सुंदरिया,
प्रस्तुत करती दृश्य कराल ।।
आगे बढ़े अग्र के सुत थे,
करते महा भयंकर मार ।
कदम हटाये कभी न पीछे,
दिख लाया था शौर्य अपार ।।
बहुत संख्यक अरिदल की सेना,
युद्ध भयंकर हुआ महान,
भारत भू के रणवीरों ने,
किया वहां था आत्म बलिदान ।।
सती हुई वे वीर नारियां,
आर्य धर्म परिपूर्ण हुआ ।
हिन्द देश की बालाओं का,
कैसा विकट स्वरूप हुआ ।।

---●---

अग्रोहा पुनः बसाना है

❑ दुलीचन्द 'शशि'
हैदराबाद

अग्रोहा पुनः बसाना है, अग्रोहा पुनः बसाना है ।

वह अग्रोहा, जिसके कण-कण में, शूरवीरता बिखरी है ।
वह अग्रोहा, जिसकी माटी से, गौरव-गरिमा निखरी है ।।
वह अग्रोहा, जहां महासती शीला की पुण्य समाधी है ।
वह अग्रोहा, जो पूर्व पुरुष श्री अग्रसेन की थाती है ।।
उस अग्रोहेकी अमर कीर्ति को फिर परवान चढ़ाना है ।
अग्रोहा पुनः बसाना है, अग्रोहा पुनः बसाना है ।

●

इतिहासों के पृष्ठों में है, जिसकी यश-गाथा अजर-अमर ।
जहां अग्रसेन महाराजा के, आदर्श बने थे ज्योति-प्रखर ।।
जहां एकतन्त्र ने, प्रजा-तंत्र का नया रूप दर्शाया था ।
थी जहां अमीरी कैद नहीं, सबने समान सुख पाया था ।।
उस अग्रोहा में नव-निर्माणों की ज्योति को पुनः जगाना है ।
अग्रोहा पुनः बसाना है, अग्रोहा पुनः बसाना है ।

●

अवतरित हुए थे, अग्रवंश के आदि पुरुष, जहां अग्रसेन ।
एक ईंट एक मुद्रा की परिपाटी जिनकी अमर देन ।।

जहां न्याय, सत्य की धर्मध्वजा, गर्वित मन से इठलाती थी ।
जिनके आंचल में रिद्धि-सिद्धि हंसती थी, मंगल गाती थी ।।
उस अग्रोहा की पुण्य-भूमि में, फिर सुख-सुमन खिलाना है ।
अग्रोहा पुनः बसाना है, अग्रोहा पुनः बसाना है ।

●

जिसके आँगन में बन्धु-भावना की बहती थी गंगा सदा ।
उस अग्रोहा की किस्मत में भी हा ! क्या यह भी योग बदा ।।
धन-जन सम्पन्न सुवन जिसके, विचरे सम्मानित मोद भरे ।
उनकी जननी इस तरह हाय ! बर्बाद हुए चित्कार करे ।।
फिर ध्वस्त हुए अग्रोहे के मस्तक पर मुकुट सजाना है ।
अग्रोहा पुनः बसाना है, अग्रोहा पुनः बसाना है ।

●

ओ 'अग्र बन्धुओं' ! तुम्हें अगर, निज आन-बान से जीना है ।
तो अग्रोहे की क्षत-विक्षत छाती को पहले सीना है ।
तुम कोटि-कोटि संख्या में हो, है जाति तुम्हारी यहां वहां ।
खण्डित हो जिनकी जन्मभूमि, उठता है उनका भाल कहां ।
फिर पूर्व-पुरातन गरिमा के सुख-सौरभ को सरसाना है ।
अग्रोहा पुनः बसाना है, अग्रोहा पुनः बसाना है ।

---●---

एक आस्था अग्रोहा के प्रति

❑ डॉ. स्वराज्यमणी अग्रवाल
जबलपुर (म.प्र.)

एक ज्योति पुञ्ज
समय के गर्द-गुबार की तहों से घिर गया है,
मेरी आँखों में अतीत का सपना तिर गया है,
एक टीले में छिपा संदेश
मुझे निरन्तर प्राप्त हो रहा है
अतीत की गौरव गाथा में
न जाने क्या-क्या कह रहा है ।।

एक अजन्मी आस्था अंत: में पल रही है,
अग्रोहा के प्रति अनुराग ज्योति जल रही है,
आज नहीं तो कल —
गर्द-गुबार के धुंधल के
ये संशय के कुहासों को हटना ही पड़ेगा ।।
किसी के शौर्य के स्वरों को सुनना ही पडेगा ।।

मेरी आस्था बलवती होती जा रही है
विक्रमादित्य के सिंहासनी टीले की,
याद गहरा रही है ।
आज नहीं तो कल
कोई चरवाहा आएगा
उस टीले की तरह
तुम पर विराजमान होगा
और फिर
उत्खनन के द्वारा
तुम्हारे शिलालेख अग्रसेन के

चल अग्रोहा-धाम !

❑ डॉ. विष्णु पंकज
जयपुर

ले मन हरि का नाम ।
चल अग्रोहा-धाम ।।
यह वह पावन भूमि, जहां अग्रसेन का राज ।
ईट-रुपैया-नीति, था 'सुखी समृद्ध समाज ।।
कर हे मन, उसे प्रणाम ।
चल अग्रोहा-धाम ।।
यहां महालक्ष्मी का वास, सर्व सुखों की खान ।
इसकी महिमा का करें, देव-वृन्द यश-गान ।।
सुमिरन कर आठों याम ।
चल आग्रोहा-धाम ।।
जप-तप का सुन्दर केन्द्र, यह धरती स्वर्ग समान ।
देती जन-जन को मोक्ष, यह रहस्य ले जान ।।
तज कर प्रपंच तमाम ।
चल आग्रोहा-धाम ।।

---●---

गौरव खण्डहरों में छुपे अवशेष
सिंहासन की पुतलियों की तरह
महाराजा अग्रसेन के गौरव की
कथा सुनाएंगे
और हमें मिलेगी
तभी सही दिशा
तब ही लोग कहेंगे
हमने जो भी लिखा, सही लिखा ।

---●---

हे अग्रवंश के पुण्यधाम !

❑ दुलीचन्द 'शशि'
हैदराबाद

हे अग्रवंश के पुण्य धाम
है नमन तुम्हें हे आदिग्राम

तेरी गोदी में संस्कृतियां
कितनी पनपी, परवान चढ़ीं
तेरी माटी से गौरव की
कितनी गाथाएं गयी गढ़ीं ।
तेरा आँचल आदर्शवाद की
उपमाओं से भरा पड़ा
दे रही गवाही गरिमा की
सतियों की अब तक बनी मढ़ीं
हे अग्रवंश के पुण्यधाम ।
है नमन तुम्हें हे आदिग्राम ।।

तेरे अंचल से प्यार और
अपनत्व लुटाया जाता था
हर पीड़ित जन तेरे आंगन में
गले लगाया जाता था
सच्चे समाजवादी प्रसून
तेरी माटी में निपजे थे
मानव, मानव को बन्धु भाव का
सबक पढ़ाया जाता था
गौरव-गरिमा मण्डित ललाम ।
है नमन तुम्हें हे आदिग्राम ।।

भजन

❑ बाबूलाल अग्रवाल
छतरपुर

चलो हे बन्धु अग्रोहा को, करो न अबेर
श्री वैभव की गौरव गरिमा, खेड़ छिपाए ढेर
जन्म भूमि की करुण कहानी लगा रही है टेर
चलो हे बन्धु.....

महाराज अग्रसेन की रही आत्मा पेर
अग्रवाल हर भज से दानी चुप क्यों अब की बेर
चलो हो बन्धु.....

उछोगी हो अरे देख के मैले गेरऊँ गेर
परमारथ की अगणित साखें सांची रही बखेर
चलो हे बन्धु.....

ईंट रुपया की परिपाटी लेव पुरानी फेर
पुनरुस्थान करौ जननी को हो रही भइया देर
चलो हे बन्धु.....

---●---

तेरी गोदी में संस्कृतियां
प्रत्यक्ष दिखायी देती हैं
इतिहास और जन श्रुतियों की
आवाज सुनाई देती है
तेरे आँगन में इठलाती
सुख-समता की भीनी सुगन्ध
उस पूर्व पुरातन गरिमा की
हर बार दुहाई देती है
हे अग्रसेन के कीर्तिधाम ।
है नमन तुम्हें हे आदिग्राम ।।

---●---

अग्रोहा तीर्थ बनाना है

❑ छेदालाल मित्तल
वनस्थली (राज.)

उच्च ध्येय रखकर हम सबको,
गिरा समाज उठाना है,
सुख-दुख को समभाव समझकर
हंसकर सहते जाना है ।

सूर्य-चन्द्र की भांति तीर्थ का
सूर्य प्रकाश फैलाना है ।
दस्सा-बीसा भेद मिटाकर,
अग्रोहा तीर्थ बनाना है ॥

तजकर भेद-भाव आपस के,
निश-दिन बोलें मीठी वाणी ।
सदाचार का पाठ पढावें ।
संमति कभी न हो अभिमानी ॥

दिव्य शांति संदेश जाति को,
देकर मेल बढ़ाना है ।
अग्रोहा की ख्याति बढ़ाकर
सबको साथ उठाना है ॥

कदम मिलाकर अग्रवंशियों,
गीतमेल के गाना है ।
युग-सर्जन का भाव हृदय में,
लेकर बढ़ते जाना है ॥

---●---

चतुर्थ खण्ड

अग्रवाल

अच्छाई की ओर अग्रसर होता जाए ।
ग्रहण करे आदर्श धर्म का पथ अपनाए ॥
वाणी के अनुरूप आचरण जो करता हो ।
लक्ष्य निष्ठा जो अविचल अग्रवाल कहलाए ॥

उद्‌बोधन

❑ राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त
चिरगांव (झांसी), उ.प्र.

निज पूर्वजों के सद्‌गुणों को यत्न से मन में धरो ।
सब आत्म परिभव-भाव तज निज रूप का चिन्तन करो ।।

निज पूर्वजों के सद्‌गुणों का गर्व जो रखती नहीं ।
वह जाति जीवित जातियों में रह नहीं सकती कहीं ।।

किस भाँति रहना चाहिये, किस भाँति मरना चाहिये ।
सो सब हमें निज पूर्वजों से याद करना चाहिये ।।

पद चिन्ह उनके यत्नपूर्वक खोज लेना चाहिये ।
निज पूर्ण-गौरव-दीप को बुझने न देना चाहिये ।।

विचार लो कि मृत्यु हो, न मृत्यु से डरो कभी ।
मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करे सभी ।।

हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिये ।
मरा नहीं वहीं कि जो जिया न आपके लिये ।।

यही पशु प्रवृत्ति है कि आप-आप ही चरे ।
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे ।।

---●---

अग्रवाल महिमा

❑ काका हाथरसी
हाथरस (उ.प्र.)

प्रगतिशील है विश्व में अग्रवाल के पूत
इनकी कर्मठ शक्ति को, कूत सके तो कूत
कूत सके तो कूत, जानते ज्ञानी ध्यानी
महाराजा श्री अग्रसेन थे दानी-मानी
उनके वंशज, मिल मालिक बौद्धिक व्यापारी
दूर कर रहे, उद्योगों द्वारा बेकारी

क्रय-विक्रय की कला में, अग्रवाल विख्यात
वस्तु स्वदेशी देश से, करते हैं निर्यात
करते हैं निर्यात, विदेशी मुद्रा पाएं
अर्थ जुटाकर अपना देश समर्थ बनाएं
शिक्षा शास्त्री प्रिंसिपल हैं प्रोफेसर हैं
न्यायाधीश, वकील, डाक्टर, इंजीनियर हैं

सूझ-बूझ के धनी यह, चलें प्रगति की राह
जनसंख्या से लीजिए, अग्रवंश की थाह
अग्रवंश की थाह, उच्च इनकी मर्यादा
अग्रवाल भारत में दो करोड़ से ज्यादा
समदृष्टा शासन का देखो न्याय निराला
मन्त्री नहीं केन्द्र में, कोई अग्रवाल

'काका' गए विदेश तब, दिखा सुखद यह सीन
उच्च पदों पर है वहां अग्रवाल आसीन
अग्रवाल आसीन, कर्म-कर्तव्य समझते
भारतीय आगत आये, तो स्वागत करते
कह काका लिख रहे वही, जो देखा जैसा
अग्रवाल नहिं मिलें, विश्व में देश न ऐसा

---●---

अग्रवीरो ! जयन्ती मनाने चलो

❑ दुलीचन्द 'शशि'
हैदराबाद

आओ मिल-जुल नए गीत गाने चलो ।
अग्रवीरो ! जयन्ती मनाने चलो ।।

भूले क्या आज तुम किसकी सन्तान हो ?
जिसकी जाति का सर्वत्र सम्मान हो ।।
उसके आदर्श को दृढ़ बनाने चलो ।
अग्रवीरो ! जयन्ती मनाने चलो ।।

फिर परस्पर सुखद भाई - चारा बढ़े ।
नित्य उत्साह नूतन हमारा बढ़े ।।
द्वेष और डाह के दुर्ग ढहाने चलो !
अग्रवीरो ! जयन्ती मनाने चलो ।।

फिर से चूमे सफलता हमारे कदम ।
आओ आगे बढ़ें आज खा के कसम ।।
प्यार की ज्योति घर-घर जगाने चलो ।
अग्रवीरो ! जयन्ती मनाने चलो ।।

तुम ही जाति के गौरव हो, सरताज हो ।
अपने गौरव को भूले हुए आज हो ।।
पूर्व गरिमा को फिर से लिवाने चलो ।
अग्रवीरो ! जयन्ती मनाने चलो ।।

अपने राजा अग्रसेन महाराज थे ।
जिनके क्या खूब ही ठाठ के राज थे ।
आज वन्दन है शत-शत हमारा उन्हें ।
न्याय और सत्य को फिर जगाने चलो ।।

एक रुपया एक ईंट की परिपाटी पर ।
देखो कैसा अनोखा बसाया नगर ।।
उनके आदर्शों को जगमगाने चलो ।
अग्रवीरो ! जयन्ती मनाने चलो ।।

---●---

अग्रवालों से

❑ लालमन आर्य

अग्रसेन के लाल सुनो, युवा वृद्ध और बाल सुनो ।
धनवानों कंगाल सुनो, अग्रोहा तुम्हें बुलाता है ।।

याद करो वह समय यहां, जब अग्रसेन महाराजे थे ।
भूखा कोई गरीब नहीं था, सबके हौसले ताजे थे ।।
देश भक्त भरपूर थे, राज भक्ति में चूर थे ।
भेद भाव से दूर थे, यह इतिहास बताता है ।।१।।

ऐसे राज में बसने का तो, जी सबका ही चहाता था ।
एक रुपया ईंट का जोड़ा, हर घर से मिलता था ।
लाख घरों की बस्ती थी, सारी चीजें सस्ती थी
बनी हवेली हस्ती थी, हरेक लखपति कहलाता है ।।२।।

भारत के कोने-कोने में, अग्रवाल बसे पाते,
लाखों और करोड़ों के ये, मालिक वहां पर कहलाते ।
कमा-कमा कर दान करें, देश की ऊँची शान करें ।।
अग्रोहा पर ध्यान करें जो जीर्ण शीर्ण पाता है ।।३।।

बीत गया सो बीत गया, अब अगला समय संभालो तुम,
अग्रोहा की उन्नति में, अपने को डालो तुम ।
कहे लालमन आर्य, करो वहाँ शुभ कार्य
निश्चय आप विचारिये, कर्त्तव्य क्या समझाता है ।।४।।

---●---

अग्रसेन-वंशजो कुछ करके दिखादो

❑ डॉ. संत हास्यरसी

महाराजा की आज फिर से ज्योति जलादो ।
अग्रसेन-वंशजो कुछ करके दिखादो ।।
परिवार हों, संयुक्त हों, संध्या सुगन्ध हों ।
नित गूँजे वैदिक ऋचाएं और छन्द हों ।
सौ साल तक जीओगे, धूम्रपान छोड़ दो ।
बुरे व्यसनों से दोनों हाथ जोड़ लो ।
भ्रम जाल के परदे को यथा शीघ्र हटा दो ।
अग्रसेन-वंशजो कुछ करके दिखादो ।।
इच्छानुसार दान दो, दानव दहेज है ।
फिजूल खर्ची से करना तुमको परहेज है ।
दूसरे की बेटी को अपनी बनाइए ।
भोली डोली की ना होली सी जलाइए ।
अग्रवंश की ध्वजा चहुं ओर फहरादो ।
अग्रसेन-वंशजो कुछ करके दिखादो ।।
है शराब जहर इसको फौरन छोड़ दो ।
जो भी पीना चाहे उसका साथ छोड़ दो ।
हजारों ट्यूबें ना शादी में जलाइए ।
दिन में फेरे डाल कर पैसा बचाइए ।
रूढ़िवादिता का नामोनिशां मिटा दो ।
अग्रसेन-वंशजो कुछ करके दिखादो ।।
शुभ घड़ी 'डिस्को' नहीं उपदेशक बुलाए ।
अच्छे-अच्छे गीत मन में गुनगुनाऐं ।
संगठन में शक्ति है मत इसको भूलिए ।
हलकी-फुलकी खुशी में मत ज्यादा फूलिए ।
सबको अग्रसेन जी की सीख समझादो ।
अग्रसेन-वंशजो कुछ करके दिखादो ।।

---●---

हम कौन है ?

❑ रामावतार केजड़ीवाल
मुम्बई

हम उन वीरों के वंशज है, जो अग्रोहा के राजा थे ।
नाम था जिनका अग्रसेन, बजते जहाँ नौबत बाजा थे ।
सब सुखी और खुशी से रहते थे, न कंट्रोल न कोई राशन था ।
स्वतन्त्र वहाँ सब थे रहते, स्वतन्त्र वहाँ का शासन था ।।
सद्भावना भरी थी हर दिल में, धन दौलत का कोई गुमान न था ।
रहते थे परस्पर हिलमिल करके, तेरे-मेरे का ध्यान न था ।
अन्न-धन की थी कमी नहीं, हेली नोरा थे भरे हुए ।
जो चाहे सो खा जाये जहाँ, नहीं ताले वहां थे लगे हुए ।।
दूध-दही के तो हरदम, भण्डार वहाँ उपलाते थे ।
जल में भी थी इतनी ताकत, घी-तेल तलक शरमाते थे ।
एक लक्ष परिवार वहां पर, आस-पास में रहते थे ।
थे सभी वहाँ पर लखपति, जिन्हें बड़ा न छोटा कहते थे ।।
जब कभी कोई भाई, दुःख के मारे आज जाते थे ।
तो एक एक दे ईंट, उनकी हवेली चीनवाते थे ।
और एक-एक मुद्रा देकर, लक्षपति उन्हें बनाते थे ।
हम अपने पथ को भूल गये, पथ अपना अब याद दिलाते हैं ।।
हम अग्रसेन के वंशज हैं, हम 'अग्रवाल' कहलाते हैं ।
जब कभी किसी भाई पर, भीड़ पड़े तो अपना फर्ज निभायेंगे ।
तन-मन-धन और सारी शक्ति से, इनका दुःख दर्द मिटायेंगे ।

---●---

आह्वान

❑ विष्णुचन्द्र गुप्त
दिल्ली

अग्रसेन की हम सन्तान,
करते हैं नित गौरव गान ।
उनके आदर्शों को मान,
जीवन में हम बनें महान ।।१।।

मिल-जुलकर हम प्रेम बढावें,
द्वेष-भाव को दूर भगावें ।
समता निज जीवन में लावें,
अहं भाव है झूठी शान ।।२।।

सादा जीवन उच्च विचार,
यह हो जीवन का आधार ।
मन से कर आदर सत्कार,
यथा शक्ति हम देवें दान ।।३।।

दहेज दिखावा या प्रदर्शन,
करते हैं जाति का मर्दन ।
झुकती आज इसी से गर्दन
इससे जल्दी पावें त्राण ।।४।।

करनी व कथनी का अन्तर,
आदर्शों का कर छूमन्तर ।
धधक रहा अन्दर से अन्तर,
उसकी ध्वनि को ले पहिचान ।।५।।

संयम निज जीवन में लावें,
अविद्या का भी पाप मिटावें ।
वृक्षारोपण को अपनावें,
सुनें राष्ट्र का यह आह्वान ।।६।।

---●---

साम्य-योग के शिव शंकर पर अब तक कितने फूल चढ़ाये

❑ दुलीचन्द 'शशि'
हैदराबाद

अग्रवंश की युवा-शक्तियों, उठो, बढ़ो कुछ कर दिखलाओ ।
है समाज जैसे का तैसा, उसमें नव-चैतन्य जगाओ ।।
ऐसा फूँको मन्त्र कि जिससे, विप्लव की नव कोंपल फूटें ।
ऐसा कुछ विद्रोह जगाओ, रूढ़ि-वादिता जड़ से टूटें ।।
अग्रसेन की जयकारों से, जागे गांव-गली-गलियारे ।
पर उनके आदर्श सिसकते, हारे-थके, पड़े बेचारे ।।
बहुत हुए उत्सव सम्मेलन, भाषण भी पुरजोश हुए हैं ।
कहो कौन सा उपक्रम, जिसने अग्रवंश के प्राण छुए हैं ।।
तीन दशकों से अग्रसेन के, जन्म-दिवस तो खूब मने हैं ।
उनके कीर्ति कलापों के भी, ठौर-ठौर पर छत्र तने हैं ।।
संस्मारिकाओं में उनकी, गौरव-गाथा खूब छपी है ।
जश्न मने हैं जोर-शोर से, जोश दुन्दुभि खूब बजी है ।।
नवयुग के संग-संग समाज ने अब तक कितने कदम बढ़ाए ।
साम्य-योग के शिव शंकर पर, अब तक कितने फूल चढ़ाए ।।
रोती पार्वती समता की, फंसी त्रासदी में बेचारी ।
बन्धु-भावना की अनुराधा, भटक रही है मारी-मारी ।।
अग्रसेन के आदर्शों के प्रति, हम सब अब कसमें खायेंगे ।
युवा-रक्त संकल्प करे अब, फिर उस गौरव को लायेंगे ।।
जिसकी गरिमा अग्रोहा के, माटी नीचे दबी पड़ी है ।
जिसके यश की सुघड़ लालिमा, आज उदासी लिए खड़ी है ।।
कथनी और करनी के छेदों को, आओ पैबन्द लगा दें ।
ऊँच-नींच के बीच भावनाओं का, सुन्दर एक सेतु बना दें ।।
तब तो अग्रसेन के वंशज, कहलाने के हम अधिकारी ।
बर्ना तो फिर सारी श्रद्धा, मार्ग भटकती फिरे बिचारी ।।

---●---

बिखरी तुम्हारी शक्ति
जिस दिन संगठित हो जायगी

❑ शंकरलाल अग्रवाल

अग्रवंशज वैश्य कुल के सर्वदा सिर मौर थे ।
विश्व के वाणिज्य में विख्यात हर ठौर थे ।।
वे प्रजा पालक दयामय भूमिधर कृषिधर थे ।
देश हित धन धान्य से रखते भरे कोठार थे ।।
गो विप्र सेवक शिष्ट उनके सर्वप्रिय व्यवहार थे ।
दधि दुग्ध घृत से युक्त उनके निराभिष आहार थे ।।
वे शान्ति प्रिय, धर्मावलम्बी, शील के भण्डार थे ।
नि:स्वार्थी निष्कपट निर्भय निर्विकार उदार थे ।।
जो श्रेष्ठ पदवी प्राप्त थे वे नीच पद पाने लगे ।
हा ! वैश्य वे ही अब वणिक बक्काल कहलाने लगे ।
जागो उठो, आगे बढ़ो कर्तव्य करने के लिये ।
बिगड़ी बनालो, कमर कसलो तुम उभरने के लिये ।।
विपरीत बहती वायु को अवरुद्ध करके थाम लो ।
जब तक न पहुँचो लक्ष्य तक तब तक न तुम विश्राम लो ।।
अब भी समय है अग्रवालों ! अग्र होना है तुम्हें ।
स्वर्णिम सुअवसर है न क्षण भर व्यर्थ खोना है तुम्हें ।।
तन-मन लग्न से बन्धुओं ! अविलम्ब यदि जुट जाओगे ।
निश्चय मिलेगी सफलता, मनवांछित फल पाओगे ।।
बिखरी तुम्हारी शक्ति जिसजिन संगठित हो जायेगी ।
नवनिर्माण होगा और मां वसुन्धरा खिल जायेगी ।।

---●---

अग्रवंश के प्रति

❑ ईश्वरचन्द गुप्त 'ईश'
मुरादाबाद

अग्रवंश से अग्रवाल हो, अग्रदूत बने बनो जगती में ।
अग्रसेन की संतति होकर, अग्र प्रदर्शक हो धरते में ।।

भारत के निर्माण कार्य में, अग्रवंश का योगदान है ।
भारत का इतिहास बताता, 'अग्रोहा' की साक्ष्य शान है ।।

भारत के समाजवाद में, अग्रवाद की ज्योति जगादो ।
'ईंट-रुपया' के दर्शन से, 'अर्थ-विषमता'-श्राप मिटा दो ।।

पर 'दहेज' के भूत-प्रेत पर 'शुभ-विवाह' पर मोल-भाव पर ।
यश-वैभव, आडम्बर पर, गर्व न हो, समता हो उर मर ।।

कितने ही घर उजड़ गये हैं, कितनी 'अग्रबाला' बिछुड़ी ।
चांदी के टुकड़ों के कारण, कितनी हंसी उजाड़ पड़ी ।।

सोचो अपने नव-जीवन पर, देखो पिछले युग-जीवन को ।
केवल नभ को ही न निहारो, देखों नीचे भूतल-जन को ।।

अपने छोटे-बड़े सभी से, स्नेह-भाव समभाव रखो तुम ।
घृणा-द्वेष धन-दर्प न हो कुछ, मधुर-मिलन का ध्येय रखो तुम ।।

जाति के उद्देश्य मार्ग से, अग्रसेन के सद विचार से ।
कभी न विचलित हो, प्रशस्त हो, 'ईश' वीर हो तन-मन-धन से ।।

---●---

जाति की बही

❑ त्रिलोक गोयल
अजमेर

अपनी जाति की बही में देखो, सब लोगों का खाता ।
जमा किसी के नाम रकम है, कर्ज किसी पर आता ।।

अग्रवाल समाज के राजा महाराजा
गुर्जर, महिधर, अग्रसेन नृप, वीर अभय चन्द राजा ।
जैन दिवाकर, हेमचन्द्र का डंका दसु दिशी बाजा ।।
अग्र नरेशो का यश अब तक भी इतिहास बताता -अपनी ज़ाति-

अग्रवाल समाज के सेठ साहूकार
बावन करोड़ी सेठ हरभज शाह, मेहता श्री चन्द दानी ।
बंसल जालीराम, एक से बढ कर एक कहानी ।।
लक्ष्मी पुत्रों की गौरव गाथा जन-जन गाता -अपनी जाति-

अग्रवाल समाज के कवि साहित्यकार
भारतेन्दु, रत्नाकर से कवि, गुप्त, प्रसाद सरीखे ।
धनी कलम के श्री प्रकाश से पत्रकार थे दीखे ।।
स्वर्णाक्षर में लिखा हुआ, चारण जसराज दिखाता -अपनी जाति-

अग्रवाल समाज के देश भक्त-राजनेता
लाला लाजपतराय कहीं पर, जमनालाल बताऊँ ।
कहीं लोहिया राम मनोहर, देश भक्ति दिखलाऊँ ।।
भारत मां की चुनरीं में, अनुपम लाल जड़ाता -अपनी जाति-

अग्रवाल समाज की सती नारियां
मां माधवी, सतीशीला, गूजरी सती गुरू आनी ।
झुंझनूं बैठी पुजे जगत में, रानी सती नाराणी ।।
पावन अग्रोहा का पत्थर पत्थर देव कहाता -अपनी जाति-

उन्नति-पथ पर चढ़ते जाओ

❑ ताराचन्द लंडूका
जयपुर

कर्तव्यनिष्ठ हे अग्रवीर ! उन्नति पथ पर चढ़ते जाओ ।।
हिम शिखर, शिलायें, वज्रपात, बाधक बन जो मग में आवें ।
पर लगन तुम्हारी बनी रहे वह शिथिल नहीं होने पावे ।
सग कंटक रोड़े कितने ही आयें पर तुम बढ़ते जाओ ।
कर्तव्यनिष्ठ हे अग्रवीर ! उन्नति-पथ पर चढ़ते जाओ ।।

शोले, ओले कुछ भी बरसें, चाहे बिजली चमके कड़के ।
बन प्रलयंकर तुम शमन करो सच्चे सपूत भारत माँ के ।।
हो निर्भय अग्रसेन वंशज दृढ़ता से पग बढ़ते जाओ ।
कर्तव्यनिष्ठ हे अग्रवीर ! उन्नति-पथ पर चढ़ते जाओ ।।

हे नौजवान ! तुम दीप बनो, प्रगतिमय इस जन-जीवन के ।
संकोच और भय त्याग सभी, इस जीवन को जगमग करके ।
अज्ञान-रूढ़ि-तम हरने को, नवजीवन ज्योति जला जाओ ।
कर्तव्यनिष्ठ हे अग्रवीर ! उन्नति पथ पर चढ़ते जाओ ।।

---●---

अग्रवाल समाज के दहेज खोर
इस समाज में कुछ ऐसे जो बेच रहे हैं बेटे ।
सो-सो ठोकर खाय न संभले, ऐसे नकटे, ढेटे ।।
हर समाज उन पर हंस-हंस कर अंगुली रहा उठाता -अपनी जाति-

अग्रवाल समाज में व्याप्त भेद भाव कुरीतियां
ऊँच नीच के, भेद भाव के देखे झूठे झगड़े ।
सामाजिक कार्यों में लंगी लगा रहे हैं लंगड़ी ।।
अग्रोहा की प्रीति-रीति का, कोई न बिगुल बजाता -अपनी जाति-

---●---

मैं अग्रसेन बन जाऊं

❑ पवन कुमार राधेश्याम मंगल
इन्दौर (म.प्र.)

मां मुझ को तू हिम्मत दे, मैं अग्रसेन बन जाऊं,
उस वीर पुरुष के सिद्धान्तों को मैं सबको समझाऊं ।

करूं वकालत सच्चाई की, दुर्गुण दूर भगाऊं,
मां मुझको तू साहस दे, मैं अग्रसेन बन जाऊं ।

सदाचार बंधुत्व प्रेम को, घर-घर जाकर समझाऊं,
अग्रोहा पति अग्रसेन के, नियमों को मैं बतलाऊं ।

मां मुझ में तू ज्ञान बढ़ा, मैं अग्रसेन बन जाऊं,
एक ईंट और एक रुपया, का महत्व समझाऊं ।

हिल-मिलकर हो उत्थान जाति का, यह कैसे बतलाऊं,
जो कुरीतियां घुसी जाति में, उनको दूर भगाऊं ।

मां कुछ ऐसी बुद्धि दे, मैं अग्रसेन बन जाऊं,
मंथन कर मैं अग्रजाति का, ऊंचा नाम उठाऊं ।

अग्रवाल को सबके आगे, मैं लाकर दिखलाऊं,
इतना काम करूं जो तो, ये दिन सार्थक पाऊं,
मां मुझको तू हिम्मत दे, मैं अग्रसेन बन जाऊं ।

---●---

अग्र ! तुमको याद करती

❑ कुमारी शकुन्तला 'किरण'
अजमेर

वंश-गङ्गाजल, गरल सी, घुल रही कटु रीतियाँ,
पाहुनि सी स्मृति की, पूज कुछ दिन नीतियाँ ।
विषमता के द्वार जलती, जिन्दगी की कामना,
अग्र ! तुमको याद करती, आज युग की यातना ।।

कुचल देते, स्वर-दहेजी, पंखुरि की प्यास को,
लील लेते, ज्वाल बन फिर, उम्र के मधुमास को ।
स्वप्न की देहरी सिसकती, कुमकुमी-आराधना,
अग्र ! तुमको याद करती, वेदना की अल्पना ।।

नगरवधू सी आस्थाएँ, जब गलित अभिमान ढोती,
मिलन के पुल टूट जाते, कल्पना नीलाम होती ।
चाँदनी की छाँव, जलती विमल भोली भावना,
अग्र ! तुमको याद करती, चेतना की वन्दना ।।

'ईंट-रुपये', की सुनीति, सो गई श्मशान में,
समाजवादी ध्येय सारे खो गये अज्ञान में ।
खण्डहर को रूप दो, भटके चरण को साधना,
अग्र ! तुमको याद करती, आज भीगी अर्चना ।।

---●---

अग्रबन्धुओ उठो

❑ श्रीमती सरोज बिंदल
गुड़गांव

अग्रबन्धुओ उठो, समय ने ली फिर से अंगड़ाई है ।
पतित समाज उठाने हेतु, नई चेतना आई है ।

निकलो अब इस दलदल से,
जिसमें अब तक तुम फंसे हुए ।
झूठी शान दिखावे के,
चक्कर में हो तुम धंसे हुए ।
ध्यान लगाकर देखो तो,
निज जाति गोत्र के भाई को ।
नींद उड़ी जिसकी आंखों से ।
कोस रहा मंहगाई को ।
शादी क्यों व्यापार बनी है,
नहीं समझ में आता है ।
हर बेटे का बाप भला क्यों,
पुत्र बेचना चाहता है ?
उसको आढ़त बना दिया है,
जो इक भावुक नाता है ।
दो मन मिलते दो तन मिलते,
यह देख जिया हर्षाता है ।

लेकिन जब धन के लोभी कुछ,
इसमें रोड़ा अटकाते हैं ।
नाजुक से इस रिश्ते को भी,
चांदी से वे तुलवाते हैं ।
उस समय हृदय रो उठता है,
लज्जा से सिर झुक जाता है ।
हम अग्रसेन के वंशज है,
यह ख्याल डोल सा जाता है ।
है समय अभी भी समझो तुम,
इस पाप-पंक से निकलो तुम ।
कुछ ठोस कदम आगे रखो,
मत बातों से तारे तोड़ो ।
छोड़ो इन झूठे झगड़ों को,
और लेन-देन के रगड़े को ।
सब वैश्य वंश के भ्राता हैं,
बस एक स्नेह का नाता है ।
ऊँचे स्वर से बोलो नारा,
यह अग्रवंश है इक सारा ।
हम इसका मान बढ़ायेंगे,
और कीर्ति-ध्वजा फहरायेंगे ।
जयकार जगत में गूंजेगा,
भव अग्रसेन को पूजेगा ।

---●---

अग्र कहाते हो

❑ स्व. श्री विश्वेश्वरनाथ गुप्ता
जयपुर

अग्रसेन सन्तान वीर ! कर्तव्य भुलाते हो ।
आलस निद्रा में पड़कर, क्यों करवट खाते हो ।।
जाग चुकी है अन्य जातियां, देखो जग की सारी,
पथ विद्या विज्ञान उन्नति, होड़ लगी है भारी,
फिर तुम्हीं सबसे पीछे, क्यों हटते जाते हो ।। कर्तव्य ।।
त्याग सभ्यता संस्कृति अपनी, दूजों को अपनाते,
भाषा, वेश, विदेशी अपना, फूले नहीं समाते,
फैशन चक्कर में निज गौरव, भूले जाते हो ।। कर्तव्य ।।
दहेज का दानव ग्रस्ता है, मुँह फैलाए भारी,
निर्धन माता पिता कन्याएं, आज त्रसित हैं सारी,
क्यों बाजार में पुत्रों की, बोली लगवाते हो ।। कर्तव्य ।।
दिन भर अथक परिश्रम करके, करते कठिन कमाई,
होटल, चाय, पार्टी, जीमन में क्यों जाय उड़ाई,
रीति रिवाजों में पानी सम, द्रव्य बहाते हो ।। कर्तव्य ।।
कला-संस्कृति के परदे में, युवती को नचवाते,
बड़े छोटे बच्चों से, भद्दे गीत गंवाते,
अर्द्धनग्न अश्लील सिनेमा, क्यों दिखलाते हो ।। कर्तव्य ।।
हुई फूट के कारण मिट्टी, स्वर्णिम लंका नगरी,
इसी फूट से भारत माता, पराधीन हो जकड़ी,
तुच्छ बात ले क्यों समाज में, कलह बढ़ाते हो ।। कर्तव्य ।।
अग्रसेन के वंशज रहना, चाहिये तुमको आगे,
ऐसा तुम आदर्श रखो जो, दुनियां पीछे भागे,
अकर्मण्य बन जग में अपनी, हँसी कराते हो ।। कर्तव्य ।।
बातों का अब समय नहीं, तुम करतब पथ-पर धावो,
संभल-संभल कर आगे को, दृढ़ता से कदम बढ़ावो,
निज शक्ति को पहचानो, तुम अग्र कहाते हो ।। कर्तव्य ।।

---●---

पांचवां खण्ड

निज भाषा उन्नति अहै
सब उन्नति का मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के
मिटै न हिय का शूल

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

क्या मार सकेगी मौत उसे
औरों के लिए जो जीता है,
मिलता है जहां का प्यार उसे
औरों के लिए जो मरता है ।।

विविध

रिवाजों की हमारी कौम में हालत नहीं बदली
बुरी रसमें, बुरी चालें, बुरी आदत नहीं बदली ।
समय बदला, जहाँ बदला, नया हिन्दुस्तान बदला
मगर लड़की, मां और बाप की किस्मत नहीं बदली ।।

अभिशाप

❑ ज्वाला प्रसाद 'अनिल' प्रभाकर'
अलीगढ़ (उ.प्र.)

लड़की होना पाप नहीं अभि शाप बन गया ।।
लड़की घर स्व-जनों की रौनक -
अरु गृहस्थी की सुन्दर इज्जत ।
पर लड़की पैदा होते ही,
सच है मातम छा जाता है ।।
हंसता चेहरा कुम्हलाता है ।।१।।

युग तो बदल गया यह सच है,
पर न बदल पाई परिभाषा ।
माना लड़की कुल की दीपक,
और देश की सच्ची आशा ।।
लिपिक से लेकर प्रधान देश की
वह सब कुछ भी बन सकती है ।
पर लड़की का जन्म होते ही,
सारा घर घबरा जाता है ।।
हंसता चेहरा कुम्हलाता है ।।२।।

माना लड़की बोझ नहीं है,
वह भी हाथ बँटा सकती है ।
परवशता की जंजीरों से,
निज को नहीं छुड़ा सकती है ।।

पढ़ी लिखी आजादी पायी,
घर से निकली दफ्तर आयी ।
सभी समाजों में भी जाती,
युद्ध क्षेत्र से नहीं घबराता है,
हंसता चेहरा कुम्हलाता है ।।३।।

चाहे लड़के से नाम नहीं हो,
पूरे घर की बदनामी हो ।
नारी अबला नहीं सबल हो,
चाहे सब कुछ कर सकती हो ।।
पर समाज के कलुषित बंधन,
धनाभाव अज्ञान साथ में ।
विकट समस्या है दहेज की,
इससे पिता घबरा जाता है ।।
हंसता चेहरा कुम्हलाता है ।।४।।

इस दहेज के क्रूर करों से,
कौन स्वयं को बचा सका है ।
यह झूठे बंधन समाज के,
कोई नहीं हटा पाया है ।।
कितनों की यहां लाज लुट गई,
कितनों की ही बात गिर गई ।
कितने मांग सिंदूर पूंछ गये,
हर समाज में माता-पिता को,
यह दहेज अभिशाप बन गया ।।५।।

---●---

प्रेरणा स्रोत

❑ बी.डी. गुप्ता
मुम्बई (महाराष्ट्र)

रामचरित गीता गो गंगा, गायत्री को आदर्श मान ।
भ्रमण किया सारे तीर्थों का, सन्तों ने की उनकी पहिचान ।
भारतीय संस्कृति के उपासक, महापुरुषों से प्रभावित ज्ञान ।
सत्य, अहिंसा, दया धर्म, विश्वास है जिनके जीवन प्राण ।
लक्ष्मी की अपार कृपा सुख सम्पदा, फिर भी है एक सरल इंसान ।
मूल व्रत तो था गो सेवा पर साथ में जुड़ गया अग्रोहा उत्थान ।
सुपुत्र सुभाष भी मैदान में उतरे संग लिए जन महान ।
इतिहास पढ़े, संस्कार पड़े, संगठन बढ़े, निकली पत्रिका अग्रोहा धाम ।
स्वप्न में कुलदेवी ने दी प्रेरणा, स्थापित करो प्रतिमा हनुमान ।
द्वार-द्वार जाकर अलख जगाओ, जिससे हो अग्र वैभव उत्थान ।
महाराजा अग्रसेन ज्योति रथ यात्रा का हुआ ऐलान ।
देश में अग्रबन्धु की फैली पताका, दादा ने खींचा सबका ध्यान ।
महाराज का मिला आशीर्वाद, हुआ खूब मान-सम्मान ।
शक्ति सरोवर चले फव्वारे, फूलों से भरे उद्यान ।
चमत्कार देखो मां वैष्णवी गुफा के, चरण पादुका और भैरों बलवान ।
अखंड ज्योति जलती, बजते घंटे, चुन्नी चढ़ती, होते सरस्वती मंगल गान ।
चढ़े कलश और स्वर्ण छत्र, बनी शक्ति पीठ, लो महालक्ष्मी वरदान ।
शरद पूर्णिमा मेले पर जुटते देश-विदेश के अग्र जनों का समूह महान ।
हुए अचंभित, उड़ी नींद, बढ़ी सोच, राजनीतिज्ञों के फड़के कान ।
अग्रवालों का हित चिंतन करना होगा, चाहते यदि देश का कल्याण ।
नंद किशोर गोईन्का ने झेले वर्षा, सर्दी, गर्मी, आंधी व तूफान ।
रहे अविचलित, बढ़े सतत् पथ निज, करना था जो पूरा लक्ष्य महान ।
आज भी है वही नियम, वही लगन,शक्ति का केन्द्र बने अग्रोहा धाम ।
नई सदी में नई पीढ़ी के, हे प्रेरणा स्रोत आपको शत्-शत् प्रणाम ।

---●---

दहेज का दानव

❑ सरमन लाल 'सरस'

लाखों घर बरबाद होगए, इस दहेज की बोली में,
अर्थी चढ़ीं हजारों कन्या, बैठ न पाई डोली में ।
कितनों ने अपनी कन्या के, पीले हाथ कराने में,
कहां-कहां तक मस्तक टेके, आती शर्म बताने में ।

जिस पर बीती वही जानता, शब्द नहीं ये कहने के,
कितनों ने बेचे मकान हैं, अब तक अपने रहने के ।
गहने, खेत, दुकान रख दिए, सिर्फ मांग की रोली में,
लाखों घर बरबाद होगए, इस दहेज की बोली में ।

फिर भी रुके न अब तक लगता, मानवता की भाषा में,
लड़के वाले दरें बढ़ाते जाते, धन की आशा में ।।
यही हमारा मनुजरूप है, यही अहिंसा प्यारी है,
लड़की वालों की गर्दन पर, चालू रखें कटारी है ।

अब भी चेतो लड़के वालो, कन्याओं की शादी में,
नहीं बटाओ हाथ इस तरह, तुम ऐसी बरबादी में ।
आग लगे ऐसे दहेज की मानवता की टोली में,
लाखों घर बरबाद होगए, इस दहेज की बोली में ।

तुमको भी ऐसा दु:ख होगा, जब क्षण ऐसा आएगा ।
अथवा यह बेबस का पैसा, तुम्हें नरक ले जायगा ।
कथन 'सरस' का बुरा न मानो, रहे न पैसा झोली में,
लाखों घर बरबाद हो गये, इस दहेज की बोली में ।

---●---

नर सेवा-नारायण सेवा

❑ नीरज सिंहल 'नादान'
नई दिल्ली

कोई आँख मूँद कर पत्थर पजे,
कोई हल्दी, रोली का तिलक लगाए।
कोई फल-फूल और हार चढ़ा कर,
दूध-दही से उसे नहलाए ।

सारी रात बैठकर काटे,
गला फाड़-फाड़ चिल्लाए ।
न सोए और न सोने दें
ढोलक चिमटा खूब बजाए ।

करे परिक्रमा सोलह कोस की,
झट पहाडों पर चढ़ जाएँ ।
देकर नाम तीर्थ का उसको,
सपरिवार पिकनिक पर जाएँ ।

भूखे को जो रोटी न दें
प्यासे की न प्यास बुझाएँ ।
लगा कतार पंडितों की वो,
छप्पन भोग उन्हें खिलाएँ ।

वस्त्रहीन से छीन ले कपड़ा
रोगी को न मरहम लगाएँ ।
ऐसी पूजा, कैसी पूजा,
राम-राम की बस रट लगाएँ ।

गर पूजा ही करनी है तो,
मानव में ढूढ़ो भगवान ।
पत्थर में कभी हरि मिले हैं,
ओ मूर्ख, और 'नादान' ।

---●---

जीवन एक वीणा है

❑ चन्दन बाला जैन
हिसार

जीवन इक वीणा है, इसे बजाते रहना,
हर दिन मीठे, नये स्वरों से इसे सजाते रहना ।

●

श्रद्धा प्रेम से इसे बजाना - मीठी तानों से बहलाना,
मधुर स्वरों में स्वर सँजो कर, सबके मन को तुम सरसाना ।
जीवन मधुमय हो जाएगा, इसे सुनाते रहना,

●

तारों को तुम अधिक न कसना, ढीला भी मत उन्हें छोड़ना ।
तुम अपने जीवन की गति को, सदा समय के संग मोड़ना,
जीवन सुखमय हो जायगा, इसे बजाते रहना,

●

जीवन जीना एक कला है - जीवन तो है एक साधना ।
सुर संगीत के तारों से - मन को भी है तुम्हें बांधना,
प्रेम भाव से तन्मय होकर - ध्यान लगाते रहना ।

●

कोमल और कठोर सुरों से - सुख-दु:ख के अवसर भी आते,
केवल कुशल कलाकार ही, जीवन को संगीत बनाते ।
जीवन समरस हो जाएगा - ताल मिलाते रहना ।

●

जीवन की यात्रा में पुन: पुन: धूप-छांव के क्षण आएंगे ।
फूल अगर ललचाएंगे तो कुछ कार्य भी उलझाएंगे ।
मंजिल को अगर पार करना है तो कदम बढ़ाते रहना ।

---●---

वृद्ध माता-पिता घर में फालतू चीज हो गए

❑ श्याम बंसल
इन्दौर

निर्धन, बीमार और वृद्ध माता-पिता
घर में फालतू चीज हो गए
दर-असल यह सोच ही
श्रवण परम्परा से मेल नहीं खाती है ।
यह देन है किस युग की
किस सभ्यता ने जन्मा है इसे कौन जानै ?
वक्त के थपेड़े हर शह को
बूढा कर देते हैं एक दिन
यही तो नियति है इस जहाँ की
फिर भी शाख क्यों आमादा है
पेड़ को जड़ से उखाड़ ने पर ?
यह सोच समझ से बाहर है ।
बुजुर्गों की दुर्गति का नजारा आज,
जो नई पीढ़ी को, दिखा रहे हैं हम
दुहराएगा जिसे कल,
फिर इतिहास क्या तैयार है हम इसे देखने को ।
यह वर्ष कर दिया गया है बुजुर्गों के नाम
करोड़ों का होगा फिर घोटाला

कल्याण-योजनाओं के नाम
और फिर, अपमानित हो
बुजुर्ग-पीढ़ी बहाएगी अश्रुधार ।
तब हार कर
हमें समस्या के समाधान हेतु
तलाशना होगा, कोई दृढ़ प्रतिज्ञ चाणक्य
जो गढ़ेगा फिर कई-कई चन्द्रगुप्त
जो अव्यवस्थाओं को कर निर्वासित
करेंगे चरित्र निर्माण, चाणक्य के आदेश पर
तभी जन्म लेगी सु-संस्कारित नई पीढ़ी
जो करेगी बड़ों को प्रणाम, लौटाएगी उनका सम्मान ।
आशीषेगी बुजुर्ग-पीढ़ी उन्हें
और होगा, सुखी समाज का निर्माण
तभी होगी श्रवण की आत्मा तृप्त ।
आसमान भी देखेगा, धरती को प्यार से
और, सूरज की सिंदूरी किरणों से होगा
सागर-धरा का आंचल संतृप्त
यानि तब बीमार वृद्ध माता-पिता का,
नहीं होगा घर की, फालतू चीजों में शुमार ।

समस्या का समाधान
चाणक्य की तलाश

---●---

तरुणाई

❑ जय भगवान बंसल
समालखा

रहता है चन्द्र सदा, आकाश गंग के तारों में ।
तरुनाई निवास करती है, क्रान्ति सिन्धु के ज्वारों में ।।
तरुण राम और लक्ष्मण ने ही, निशिचर दल संहारा था ।
अभय किया था जन-जन को, भूमि का भार उतारा था ।।
प्रलय मचादी लंका में बजरंगी की हुंकारों ने ।
तरुनाई निवास करती है, कांति सिन्धु के ज्वारों में ।।१।।
कठिन चक्रव्यूह को भी, तरुण अभिमन्यु ने तोड़ा था ।
निज बाहुबल से ही उसने, लाखों को मार खदेड़ा था ।।
सारे कौरव दल में अकेला खेला था तलवारों में ।
तरुनाई निवास करती है क्रान्ति सिन्धु के ज्वारों में ।।२।।
तरूण सुभाष ने भारत में आजादी का दीप जलाया था ।
तरुण भगतसिंह ने ही तो अंग्रेजी राज हिलाया था ।।
हो गया था कुरबां आजाद भी गोलियों की बौछारों में ।
तरुनाई निवास करती है क्रान्ति सिन्धु के ज्वारों में ।।३।।
राष्ट्र बिगड़ते बनते हैं सब तरुण वर्ग के ही बल पर ।
होते है चैतन्य राष्ट्र सब तरुण चेतना के बल पर ।।
बह जाती है विकट समस्या सभी तरुण जल धारा में ।
तरुनाई निवास करती है क्रान्ति सिन्धु के ज्वारों में ।।४।।
तरुणों की गौरव गाथा इतिहास सदा दोहराता है ।
फिर किस कारण तरुण आज का खड़ा हुआ सकुचाता है ।।
करो राष्ट्रहित ठोस कार्य, क्या धरा खोखले नारों में ।
तरुनाई निवास करती है क्रान्ति सिन्धु के ज्वारों में ।।५।।

---●---

विधवा-पेंशन

❑ घनश्याम अग्रवाल
अकोला

मांग में सिन्दूर भर
और माथे पर बिन्दिया लगाये
एक सुहागिन ने जब
"विधवा पेंशन योजना" का फार्म भरा
तो अधिकारी पहले तो कुछ चौंका
फिर दफ्तरी जुबान में भौंका
"सुहागिन होकर भी तुम
विधवा का फार्म भरती हो
कानून से नहीं डरती हो ?"
उसने कहा-"कानून-वानून नहीं जानती हूँ
सिर्फ अनुभव को पहचानती हूँ
मेरे बेटे ने दस साल पहले
एम्पलॉयमेन्ट एक्सचेंज में नाम लिखवाया था ।
सर्विस के लिए ओवर-एज हो गया
तब जाकर उसका नम्बर आया था ।
और मेरे बूढ़े पति को
वृद्धा अवस्था पेंशन योजना के अन्तर्गत
फार्म भरने को पांच साल हो गये
पेंशन अब तक नहीं मिली
दफ्तर के चक्कर काट-काट कर
मेरे पति के बुरे हाल हो गये ।
इसलिए अब मैं एडवान्स फार्म भरकर
विधवा पेंशन योजना का
सही वक्त पर पूरा लाभ उठाऊंगी,
कानून मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकता
मुझे पूरा विश्वास है
जब तक मेरी पेंशन स्वीकृत होगी
तब तक मैं निश्चित ही विधवा हो जाऊँगी ।"

---●---

धर्म वही जो

❑ विष्णु चन्द्र गुप्त
दिल्ली

धर्म वही जो धारण करने योग्य मार्ग बतलाता है ।
धर्म वही जो सद्भावों की सुन्दर राह दिखाता है ।।

●

निर्भय होकर कर्म करो व प्राणी मात्र पर दया करो ।
दीन-दुःखी को गले लगाओ, समता का व्यवहार करो ।।
ऋषि-मुनि और महाजनों की वाणी का गुण गान करो ।
फल की इच्छा त्याग हृदय में सौम्य-भाव से कर्म करो ।।

सद्-कर्मों, सदभावों से नर उत्तम फल पाता है ।
धर्म वही जो धारण करने योग्य मार्ग बतलाता है ।।

●

धर्म की रक्षा यदि करोगे, धर्म मार्ग दिखलायेगा ।
सत्य, अहिंसा, प्रेम, त्याग का, सुन्दर मार्ग बतलायेगा ।।
महावीर, गौतम, गांधी की अहिंसा को अपनायेंगे ।
राम-कृष्ण के कर्म मार्ग से, जीवन में सुख पायेंगे ।।

उत्तम करनी से नर जग में उत्तम नाम कमाता है ।
धर्म वही जो धारण करने योग्य मार्ग बतलाता है ।।

---●---

दुःख अपना है-अपने पास रहता है

❑ मंजु चौधरी

बाहर के मरूथल में
भीतर की स्नेहिल-बरसात करें !
आओ दुःख-सुख की बात करें !
बातें करते-करते
दिन को रात करें !
सुख कट जाता है,
दुःख काटे नहीं करता !
क्योंकि दुःख वजनदार होता है —
और सुख हलका होता है —
केवल शिष्टाचारी होता है !
दुःख अपना है, आत्मीय है
बिना बुलाये आ जाता है,
प्रतीक्षा करनी पड़ती है - सुख की !
तुम कहते हो —
सुख फूल की तरह सुकोमल है —
और दुःख, शूल की तरह गड़ता है !
अरे भई जो 'अपना' होता है —
वही तो मन में चुभता है !
तुम चाहे जो कहो —
मुझे सुख मेहमान की तरह लगता है —
आता है —
आनन्द भोगकर चला जाता है !
दुःख अपना है —
अपने पास रहता है .....!!

---●---

मातृ देवो भवः पितृ देवो भवः

माँ बाप को भूलना नहीं

❑ अनाम

भले ही हर बात भूल जाइये, माँ बाप को भूलना नहीं,
अनगिनत है उपकार इनके, यह कभी भूलना नहीं ।

धरती के सभी देवताओं को पूजा, तभी आपकी सूरत देखी,
इन पवित्र व्यक्तियों के दिल, कठोर बनकर तोड़ना नहीं ।

अपने मुँह का कौर निकाल, तुम्हें खिलाकर बड़ा किया,
इन अमृत देने वालों के सामने, जहर कभी उगलना नहीं ।

खूब लाड़ प्यार किया तुमसे, तुम्हारी हर जिद्द पूरी की,
ऐसे प्यार करने वालों से, प्यार करना कभी भूलना नहीं ।

चाहें लाखों कमाते हो, लेकिन माँ बाप खुश नहीं रहे तो,
लाख नहीं पर खाक हैं, यह मानना भूलना नहीं ।

भीगी जगह में खुद सोकर, सूखे में सुलाया तुम्हें,
ऐसी अनमोल आंखों को, भूल से कभी भिगोना नहीं ।

फूल बिछाये प्यार से, जिन्होंने तुम्हारी राहों पर,
ऐसी चाहना करने वालों की, राहों के कांटे कभी बनना नहीं ।

दौलत से हर चीज मिलती, लेकिन माँ बाप मिलते नहीं,
इनके चरणों के प्रति, सम्मान कभी भूलना नहीं ।

संतान से सेवा चाहें तो, संतान बनकर सेवा करें,
जैसी करनी वैसी भरनी, यह न्याय कभी भूलना नहीं ।

---●---

गायत्री, का मंत्र : सत्य ज्ञान का दीपक

गंगा, गीता, गाय और गायत्री अपनी माता ।
इन चारों से, आर्य-भूमि का सबसे पावन नाता ।

●

गंगा का जल अमृत जैसा, सब को मुक्ति दिलाता,
लोक और परलोक-मुक्ति का, पावन पंथ दिखाता ।

●

गीता ज्ञान सरोवरा, हमको है कर्तव्य सिखाता,
कर्म करें हम, फल के छल से, पग पग हमें बचाता ।

●

गाय हमारी पालन हारी, प्यारी भाग्य-विधाता,
कामधेनु-सा रूप मनोहर, जीवन सफल बनाता ।

●

गायत्री के मंत्र जाप से, हर प्राणी सुख पाता,
परमपिता का यही गीत, यह जग युग-युग से गाता ।

●

ममतामयी जननि गायत्री, मंत्र यही सिखलाता,
यही मंत्र है, सत्य-ज्ञान के दीपक को दमकाता ।

---●---

नारी एक चेतावनी

❑ चन्दन बाला जैन

हे नारी तेरा आत्मा समर्पण
तेरा जीवन दर्शन
धन्य है वन्दनीय है
अतुलनीय है प्रशंसनीय है
तेरा अस्तित्व तेरा अनुराग है
तेरा आधार तेरा सुहाग है
किन्तु तेरा जीवन
उस बूंद के समान है
जो सीपी में गिरी तो
मोती बन गई
धरती पर गिरी तो
कीचड़ बन गई ।
तेरा व्यक्तित्व
तेरा प्यार है
मां की ममता है दुलार है
और तेरी सहनशीलता की
क्या उपमा दूँ ?
तूने विरोधों में जीना सीखा है ।
होठों को सीना सीखा है ।
तुझ में अद्‌भुत सहनशक्ति है
असीम पति भक्ति है,
अनन्य श्रद्धा है आसक्ति है ।
किन्तु हे त्यागमयी ।

तुझे अब तक जीना नहीं आया,
ज़हर भी पीया
मगर पीना नहीं आया ।
तेरा आदर्श तेरे लिए
अभिशाप बन गया,
तेरा त्याग तेरे लिए
पाप बन गया
तू तू ही रही
पुरुष आप बन गया ।
हे करुणामयी !
अब सोचो, समझो, जागो
स्वयं को पहिचानो
निद्रा त्यागो ।
युग-युग की रूढ़ियां, ये आस्था
ये अन्ध परम्पराएं, ये जुल्म की दासता
इन सब को तोड़ दो,
अतीत को मोड़ दो
दासता का छोड़ दो
अधिकारों के लिए लड़ना सीखो
जीवन पथ पर बढ़ना सीखो
नव इतिहास गढ़ना सीखो
सदियों से हो रहे
अनर्थ को बदलो ।
जीना है तो जीने के
अर्थ को बदलो !
जीने के अर्थ को बदलो ।
जीने के अर्थ को बदलो ।

---●---

शान्ति के मंत्र गाये जा रहे हैं

❑ रामलाल अग्रवाल, जयपुर

शान्ति के मन्त्र गाये जा रहे हैं
रोटी के लिये क्रान्ति मच रही है ।
हर मजदूर, अपनी माँगे मनवाने के लिये मैनेजर-
व्यवस्थापकों के विरुद्ध आवाज बुलन्द कर रहा है ।
ताले बन्दी, उत्पादन ठप से,
आर्थिक व्यवस्था गड़बड़ा रही है ।
शासन, प्रशासन के हिलने के आसार प्रगति कर रहे हैं ।

शान्ति के मन्त्र गाये जा रहे हैं - रोटी.....
आफिसर, बाबू से लेकर चपरासी तक
मंहगाई भत्ते, सुविधाओं के लिये
धरने, हड़ताल, आन्दोलन कर रहा है
वार्ता के दौर चलाकर मन्त्री, उच्चाधिकारी सबको परख रहे हैं
माँगें मानने मनवाने में आगा पीछा नहीं सोच रहे हैं

शान्ति के मन्त्र गाये जा रहे हैं, रोटी.....
बड़े-बड़े उद्योगपतियों, कारखानेदारों का
उत्पादन पर एकाधिकार हो रहा है
बाजारों में वस्तुओं का अभाव बढ़ रहा है
सरकार का कहीं अंकुश नजर नहीं आ रहा है ।

शान्ति के मन्त्र गाये जा रहे हैं रोटी.....
सड़क पर भिखारियों की लम्बी रेल हैं
कोढ़ी, अन्धा, लूला-लंगड़ा, पैसे-पैसे के लिये भटक रहा है।
साधू-संयासी का समय अब नहीं रहा,
उन्हें लताड़ें सुननी पड़ रही हैं
निकम्मे, निठल्ले, आलसी, अय्यासी नामों
से सम्बोधित हो रहे हैं।

रचनात्मक दिशा-बोध की दिशा में -

"ग्लुकोज" की एक-एक बूंद की तरह...

(एक आध्यात्मिक गद्य-गीत)

❑ डॉ. अनन्त पी. आनन्द (अग्रवाल)

दिल्ली, जयपुर, अजमेर

"मृत प्राय:" मानव को,
जिस प्रकार
"ग्लुकोज" की
एक-एक "बूंद",
बूंद का एक-एक "अंश"
विशालकाय चिकित्सालयों में
उपयुक्त श्रम, शक्ति, व नियम

शान्ति के मंत्र गाये जा रहे हैं रोटी.....
विधान सभाओं, लोक सभाओं, जन प्रतिनिधित्व
सभाओं में राम राज्य है
"प्रजा पालक" आराम परस्त जीवन बिता रहे है।
भावी पीढ़ी के लिये भी जमा कर रहे हैं।

शान्ति के मन्त्र गाये जा रहे है। रोटी.....
रिश्वत का बाजार गर्म है
निर्माण का हाल बेहाल है
हर आदमी को हर काम करने की छूट है
कारागृह आराम गृह बन गये हैं
चोरों लुटेरों का जीवन सुखमय बनाया जा रहा है
शान्ति के मन्त्र गाये जा रहे हैं। रोटी.....

---●---

किसान उत्पादन श्रृंखला

'आपके विश्वास का प्रतीक'

KisaN®
THE MARK OF EXCELLENCE

किसान

रिजिड पीवीसी पाइप, एचडीपीई पाइप, सबमर्सिबल पाइप,
फ्लश टैंक, बाल वाल्व, सॅक्शन, केसिंग पाइप,
हैवी प्रेशर थ्रेडेड पाइप्स, गार्डन टूयूबिंग्स, एग्री-
मोल्डेड फिटिंग्स, सॉल्वेन्ट, ओरिंग पाइप एवं फिटिंग्स,
किसान क्रेस्ट मोल्डेड फर्नीचर

मोल्डेड फर्नीचर

KisaN Crest
MOULDED FURNITURE

IS 4985
रिजिड पीवीसी पाईप्स

IS 14151
स्प्रिंकलर एचडीपीई पाईप

IS 12818
कैसिंग पाईप

IS 13592
'ओ' रिंग पाइप्स एण्ड फिटिंग्स

निर्माता : किसान ग्रुप ऑफ कम्पनीज, मुम्बई

KisaN®
THE MARK OF EXCELLENCE

श्री गोविन्द ट्रेडर्स

14, किशोर निवास, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर
फोन: 2318225, 2313959. फैक्स: 2323977
मो. 98290-63727 e-mail: sgt2@rediffmail.com

किसान उत्पादन श्रृंखला

'आपके विश्वास का प्रतीक'

KisaN®
THE MARK OF EXCELLENCE

किसान

रिजिड पीवीसी पाइप, एचडीपीई पाइप, सबमर्सिबल पाइप, फ्लश टैंक, बाल वाल्व, सॅक्शन, केसिंग पाइप, हैवी प्रेशर थ्रेडेड पाइप्स, गार्डन ट्यूबिंग्स, एबी-मोल्डेड फिटिंग्स, सॉल्वेन्ट, ओरिंग पाइप एवं फिटिंग्स, किसान क्रेस्ट मोल्डेड फर्नीचर

मोल्डेड फर्नीचर

KisaN Crest MOULDED FURNITURE

IS 4985

रिजिड पीवीसी पाईप्स

IS 14151

स्प्रिंकलर एचडीपीई पाईप

IS 12818

केसिंग पाईप

IS 13592

'ओ' रिंग पाइप्स एण्ड फिटिंग्स

QUALITY PRODUCTS FROM KisaN

निर्माता : किसान ग्रुप ऑफ कम्पनीज, मुम्बई

KisaN® THE MARK OF EXCELLENCE

श्री गोविन्द ट्रेडर्स

14, किशोर निवास, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर
फोन: 2318225, 2313959. फैक्स: 2323977
मो. 98290-63727 e-mail: sgt2@rediffmail.com

अग्र-काव्य

2004

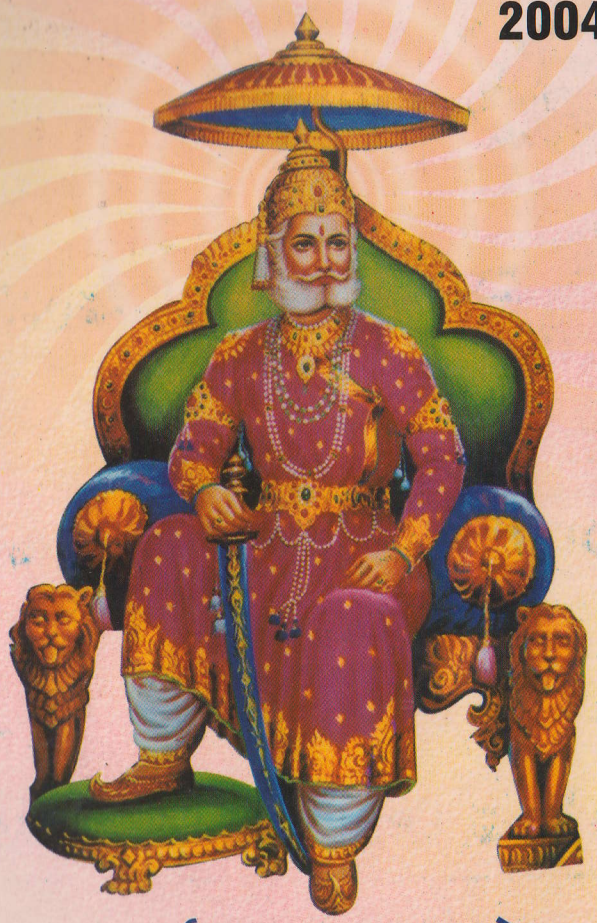

युगप्रवर्तक महाराजा अग्रसेन

अग्रणी शोध एवं प्रकाशन केन्द्र, जयपुर